मांतगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।
शक्ति शंकर बल्लभा त्रिनयना बाधवादनी भैरवी।
हंकारी त्रिपुरा पुरा गुणमयी माता कुमारेश्वरी।
या माया मधु केटभ प्रमथिनी या महिषान्मुलिनी।
या घुम्राक्षेण चंडमुण्ड मथिनी या रक्त बीजासनी।
शक्ति शुम्भ निशुम्भ देत्यदलिनी या सिद्धलक्ष्मी परा।
या दुर्गा नव कोटि शक्ति सहितां मां मातु विश्वेश्वरी।
काया हंस बिना नदी जल बिना दाता बिना याचका।
भ्रता स्नेह बिना ऋतु फल बिना धेनुश्च्दुग्घम् बिना।
नारी पुत्र बिना नरौ धन बिना वेदो बिना ब्राह्मण।
एकोपिअन्यम बिना दीपम् बिना मान्दिरम्।
ब्रह्मा मुरारस्त्रिपुरान्तकारी भानुःशशि भूमि सुतो बुद्धश्च।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहा शान्ति करा भवन्तु।
त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं ममः देवदेवः।।

प्रार्थना दिल से,
भाव से विचार से
समर्पण से होनी चाहिए।

।। श्री अम्बेजी की आरती।।

दोहा - दुर्गा दुर्गति दूर कर, मंगल कर सब काज।
मन मन्दिर उज्जवल करो, मात भवानी आज।।

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी।। जय अम्बे गौरी।।
मांग सिंदूर बिराजत, टीको मृग मद को। मैया टीको....
उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्र वदन नीको।। जय अम्बे....।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै । मैया रक्ताम्बर....
रक्त - पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।। जय अम्बे....।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्र धारी।। मैया खड्ग....
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुख हारी।। जय अम्बे....।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। मैया नासाग्रे....
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योती ।। जय अम्बे....।।
शुम्भ निशुम्भ विडारे, महिषासुर घाती । मैया महिषा....
धुम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ।। जय अम्बे....।।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोनितबीज हरे। मैया शोणित....
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।। जय अम्बे....।।
ब्रह्माणी, रूद्राणी, तुम कमला रानी। मैया तुम....
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।। जय अम्बे....।।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ। मैया नृत्य....
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ।। जय अम्बे....।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। मैया तुमही....
भक्तन के दुख हरता सुख सम्पति करता ।। जय अम्बे....।।
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी। मैया वर....
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ।। जय अम्बे....।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। मैया अगर....
(श्री) मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योती ।। जय अम्बे....।।
(श्री) अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावै । मैया जो....
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै ।। जय अम्बे....।।
जय अम्बे गौरी मैया जय मंगलमूर्ति मैया जय आनन्द करनी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ।। जय अम्बे गौरी।।

राजस्थानी त्यौहार

चैत्र शुक्ल एकम	-	नया संवत्	- हिन्दी का नव वर्ष प्रारम्भ होता है। इस दिन कलस एवम माताजी की स्थापना होती है और माताजी की नौ दिन तक पूजा की जाती है।
चैत्र शुक्ल तीज	-	गणगौर	- कुंवारी, लड़कियाँ होली से लेकर सोलह दिन बड़े धुमधाम से गणगौर की पूजा करती हैं और तीज के दिन सभी बहु-बेटियां शंकरपार्वती स्वरुप गणगौर-ईश्वर जी की पूजा करते हैं।
चैत्र शुक्ल नवमी	-	रामनवमी	- रामनवमी को 'रामचन्द्र जी' का दोपहर बारह बजे जन्म हुआ। उस वक्त जन्म-उत्सव मनाते हैं। पुष्टि मार्ग में यह दिन जयन्ति व्रत में आता है।
चैत्र शुक्ल द्वादशी	-	वामन द्वादशौ	- इस दिन भगवान ने वामन रुप धरकर राजा बलि से तीन पग भूमि का दान मंगा था। पुष्टि मार्ग में यह दिन जयन्ति व्रत में आता है।
चैत्र शुक्ल पुर्णिमा	-	हनुमान जयन्ती	- रामभक्त हनुमान का जन्मोत्सव मनाते हैं।
वैशाख शुक्ल दूज	-	आखा बीज	- यह दिन राजस्थान के बीकानेर शहर का स्थापना दिवस है। इस दिन नये कलश की पूजा की जाती है और मूँग, ज्वार, बाजरा का खिचड़ा बनता है।
वैशाख शुक्ल तीज	-	आखा तीज	- बीकानेर शहर की स्थापना को लेकर इस दिन भी लोग खुशियाँ मनाते है और पतंग उड़ाते हैं। इस दिन भी मूँग, ज्वार, बाजरा का खिचड़ा बनाते हैं।
वैशाख कृष्ण चौदस	-	नृसिंह चतुर्दशी	- भगवान विष्णु ने नरसिंह रुप में अवतार लेकर हिरण्याकश्यप का उद्धार किया। पुष्टि मार्ग में यह दिन जयन्ति व्रत में आता है।
जेठ शुक्ल नवमी	-	महेश जयन्ती	- यह दिन माहेश्वरी जाति का उद्‌भव दिवस है। इस दिन सभी भगवान महेश की पूजा करके धुमधाम से मनाते हैं।
जेठ शुक्ल ग्यारस	-	निर्जला एकादशी	- पूरा दिन निर्जल उपवास करते हैं।
आषाढ़ी अमावस्या	-	वट सावित्री व्रत	- सावित्री सत्यवान को यमद्वार से वापस लाई थी। सुहागिनें पति की दीर्घायु के लिए यह व्रत रखती हैं।
श्रावण शुक्ल तीज	-	छोटी तीज	- श्रावणी तीज का हमारे समाज में बड़ा महत्व है। लड़कियाँ पिहर में आकर धुमधाम से त्यौहार मानाती हैं, सावन झूला झूलती हैं श्रावण के गीत गाती हैं, सिधांरा होता है।
श्रावण शुक्ल पंचमी	-	नागपंचमी	- नाग देवता की पूजा की जाती हैं।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा	-	राखी पूर्णिमा	- बहन भाई को राखी बांधकर मंगल कामना करती हैं।
भादो कृष्ण तीज	-	बड़ी तीज	- बड़ी तीज को सातु तीज या कजली तीज भी कहते हैं। सारे दिन उपवास रखकर शाम को नीम या बोटी की डाली की पूजा करते हैं और चन्द्रमा का दर्शन करके व्रत की पारणा करते है।
भादो कृष्ण चतुर्थी	-	बड़ी चौथ	- चार चौथ में इस चौथ को भी उपवास रखते हैं।
भादो कृष्ण छट	-	उबछट	- स्त्रियां पूरा दिन उपवास रखकर शाम से चंद्र दर्शन तक खड़ी रहती है।
भादो कृष्ण अष्टमी	-	जन्माष्टमी	- भगवान श्री कृष्ण का रात बारह बजे जन्म-उत्सव मनाते हैं। पुष्टि मार्ग में यह दिन जयन्ति व्रत में आता है।
भादो कृष्ण बारस	-	बछ बारस	- गाय-बछड़े की पूजा करते हैं। इस दिन बाजरा ही खाते है।

भादो शुक्ल चौथ	-	गणेश चतुर्थी	- गणेश मूर्ती की स्थापना करके दस दिन तक गणेश उत्सव मनाते हैं।
भादो शुक्ल पंचमी	-	ऋषि पंचमी	- माहेश्वरी समाज में इस दिन बहन-भाई को राखी बांधती हैं।
आसोज कृष्ण एकम	-	श्राद्ध	- आसोज लगते एकम से अमावसा तक श्राद्ध पक्ष रहता हैं। कोई भी शुभ काम नहीं किया जाता हैं।
आसोज कृष्ण एकम	-	नवरात्र आरम्भ	- देवी की स्थापना करते हैं तथा नौ दिन तक पूजा की जाती हैं।
आसोज शुक्ल दशमी	-	दशहरा	- श्री रामजी ने रावण पर विजय पायी थी। अत दशहरा मनाते हैं।
आसोज पूर्णिमा	-	शरद पूर्णिमा	- शरद पुर्णिमा की रात्री को चांद की रोशनी में खीर का भोग लगाया जाता है।
कार्तिक कृष्ण चतुर्थी	-	करवा चौथ	- सुहागिनें पति की लम्बी उम्र के लिये व्रत रखती है और रात को चन्द्र दर्शन कर पति के हाथों से व्रत खोलती है।
कार्तिक कृष्ण तेरस	-	धन तेरस	- इस दिन नये वस्त्र धारण करते हैं। शाम को नये दीपक जलाये जाते हैं।
कार्तिक कृष्ण चौदस	-	नरक चतुर्दशी	- इसे छोटी दीवाली भी कहतें हैं। शाम को दीपक जलाकर पटाखे छोड़ते हैं।
कार्तिक अमाचस्या	-	दीपावली	- लक्ष्मी, गणेश जी की पूजा की जाती हैं। शाम को दीप जलाकर पटाखे छोड़कर, उत्सव मनाते हैं। नये नये कपड़े पहनते हैं, विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाते हैं।
कार्तिक शुक्ल एकम	-	गोवर्धन पूजा	- इस दिन भगवान ने अगूंली पर गोवर्धन पर्वत धारण किया इसलिये कृष्ण स्वरुप गोवर्धन जी की पूजा करते हैं।
कार्तिक शुक्ल दूज	-	भाई दूज	- बहन भाई को तिलक निकाल कर मंगल कामना करती है।
कार्तिक शुक्ल नवमी	-	आंवला नवमी	- आंवले के पेड़ की पूजा करते है तथा आंवला दान करते हैं।
कार्तिक शुक्ल एकादशी	-	तुलसी विवाह	- तुलसी जी की शालीग्राम से शादी कराते हैं इस दिन से विवाह कार्य शुरु होता है।
माघ कृष्ण चतुर्थी	-	तिलकुट चौथ	- पुत्र तथा पति की मंगल कामना के लिए चार चौथ में यह चौथ मुख्य हैं।
14 या 15 जनवरी	-	मकर संक्रांन्ति	- यह त्यौहार 14 या 15 जनवरी को ही आता है इस दिन तिल खाने तथा तिल दान करने का महत्व है।
माघ शुक्ल पंचमी	-	वसन्त पंचमी	- विद्या की देवी सरस्वती जी की पूजा की जाती हैं। सभी मां से विद्या का वरदान मांगते है।
फागुण कृष्ण तेरस	-	शिवरात्री	- पति की मंगल कामना के लिये शंकर-पार्वती की पूजा की जाती हैं।
फागुण शुक्ल पूर्णिमा	-	होली - दहन	- इसदिन भगवान ने होलिका के अग्निजाल से भक्त प्रहल्लाद की रक्षा की इसलिये होलिका दहन धुमधाम से किया जाता हैं।
चैत्र कृष्ण एकम	-	होली	- खुशी से एक - दूसरे के ऊपर रंग डालकर वसंतोत्सव मनाया जाता हैं।
चैत्र कृष्ण अष्टमी	-	शीतला अष्टमी	- शीतला देवी की पूजा की जाती है तथा ठण्डा भोजन किया जाता है।
चैत्र कृष्ण सप्तमी होली के बाद का रविवार	-	सूरज रोट	- सूरज भगवान की पूजा की जाती हैं। भाई की मंगल कामना के लिए बहन ब्रत रखती हैं।

- शशि कोठारी

महाप्रभु जी की 84 बैठकों का विवरण

बैठक 1, गोविन्द घाट - गोकुल (उ.प्र.)

श्री यमुनाजी के तट पर छोंकर वृक्ष को नीचे प्रभु विराजित हैं। यहाँ पर श्रावण सुदी 11 की अर्ध रात्रि को प्रभु श्री गोवर्धनधर ने महाप्रभुजी की दैवी जीवों के उद्धारार्थ ब्रह्म संबंध दीक्षा देने की आज्ञा की है। आप श्री ने श्रीनाथजी को पवित्रा धराकर मिश्री भोग धराया है। सर्व प्रथम ब्रह्म संबंध प. भ. श्री दामोदरदासजी हरसानी को हुआ है।

बैठक 2, बड़ी बैठक - श्रीमद् गोकुल (उ.प्र.)

यह श्री महाप्रभुजी के नित्य वचनामृत करने का स्थल है। यहीं पर वृन्दावन के महंतों ने एक बैरागी को आचार्यश्री की परीक्षा लेने के लिये भेजा था। उसके बटुए में शालिग्राम थे। वो बटुआ स्नान करने के बाद उसको दिखाई नहीं दिया। तब महाप्रभुजी ने अपने सामर्थ्य से छोंकर के पेड़ पर अनेक बटुए दिखाकर कोई भी एक बटुआ लेने के लिये कहा था।

बैठक 3, श्रीमद् गोकुल, द्वारकाधीश जी के शैया मंदिर में

यहीं पर जमीन के अंदर द्वापर युग से एक योगाश्वर बैठकर तपस्या कर रहे थे। आपने निकलकर श्री महाप्रभुजी को साष्टांग दण्डवत प्रणाम किया और आशीर्वाद प्राप्त किया। पीछे श्री द्वारकानाथजी का मंदिर बना तब योगेश्वर की कुटी जमीन में सोलह हाथ नीचे प्रवेश करी।

बैठक 4, बंशीवट, श्री वृन्दावन धाम, जि. मथुरा (उ.प्र.)

श्री वृन्दावन में बंसीवट के पास श्री महाप्रभुजी की बैठक है। यहाँ आपने प्रभुदास जलोटा क्षत्री वैष्णव को वृक्ष के पत्ते-पत्ते में भगवद् दर्शन कराकर वृन्दावन का माहात्म्य दिखाया। कृष्ण चैतन्य के सेवक गोपालदास गोडिया को श्री महाप्रभुजी की कृपा से शालीग्राम में राधा रमण के दर्शन कराये।

बैठक 5, विश्राम घाट, मथुरा (उ.प्र.)

यह बैठक श्री मथुरा के विश्राम घाट पर है। यहां पर सिकन्दर लोदी के हाकिम द्वारा एक यंत्र लगवाया गया था जिसके नीचे से हिन्दू निकलता था तो उसकी चोटी कटकर दाड़ी हो जाती थी। महाप्रभुजी ने उसके जवाब में दिल्ली के दरवाजे पर एक यंत्र लगवाया जिसके प्रभाव से उसके नीचे से निकलने वाले मुसलमान की दाड़ी कटकर चोटी बन जाती थी। बादशाह के आदेश से हाकिम द्वारा यंत्र हटवा लिया गया। इस घटना से हिन्दू जनता में महाप्रभुजी की अमिट छाप अंकित हो गई। संवत् 1544 भादव वदी 12 शरद ऋतु में विश्राम घाट पर स्नान करके प्रथम ब्रजयात्रा का प्रारंभ किया।

बैठक 6, मधुवन, महोली, जिला मथुरा (उ.प्र.)

यहां आपने माधव कुण्ड कृष्ण कुण्ड के ऊपर कदंब वृक्ष के नीचे श्री भागवत् सप्ताह परायण किया, जिसे सुनने के लिये मधुवन के श्री मधुवनिया ठाकुर स्वयं नित्य पधारते थे। आपके साथ ब्रज यात्रा में वासुदेव छकड़ा, यादवेन्द्रदास कुंभार, गोविन्द दुबे, साचोरा ब्राह्मण, माधव भट्ट कश्मीरी, सूरदासजी, परमानंदजी इस प्रकार छै: वैष्णव साथ थे।

बैठक 7, कुमुदवन, पोस्ट उस पार, जि. मथुरा (उ.प्र.) (महोली से 9 कि.मी.)

कमोदकुण्ड के ऊपर श्याम तमाल के नीचे आप श्री ने तीन दिन तक भागवत् पारायण किया। वैष्णवों के आग्रह पर आपने गीताजी का यह वाक्य कहा - ''दिव्यं ददामि चक्षु: पश्य में योगमैश्वरम'' जिससे वैष्णवों दिव्य चक्षु द्वारा कमोद, कमोदिनी सहित जल स्नान की लीला का महल आदि के दर्शन हुए। यहीं पर कृष्णदास मेघन के पूछने पर सामवेद के आधार पर ब्रज माहात्म्य की कथा कही थीं और कमोदवन नाम क्यों पड़ा यह समझाया।

बैठक 8, बहुलावन, पोस्ट बाटी गांव, जिला मथुरा (उ.प्र.)

श्री कृष्ण कुन्ड के उत्तर में वट वृक्ष के नीचे श्री महाप्रभुजी की बैठक है। यहां आपश्री ने 3 दिनों का श्री भागवत् पारायण किया तथा गौ सेवा का महत्त्व प्रतिपादित किया। महाप्रभुजी की गरिमा से प्रभावित होकर मुसलमान हाकिम ने बहुला गाय के पूजन पर लगी बंदिश हटा ली थी। उसने सेवक बनाने की प्रार्थना की। महाप्रभुजी ने अगले जन्म में अंगीकार करने का आश्वासन दिया। अगले जन्म में वह मेही ढीमर हुआ, जिसे गुंसाईजी ने अंगीकार किया।

बैठक 9, राधाकृण्ड, जि. मथुरा (उ.प्र.)

श्री राधाकुण्ड पर छोंकर के वृक्ष के नीचे श्री महाप्रभुजी की बैठक है। यहां आप एक माह तक विराजे। आपकी बैठक के पास श्यामतमाल के नीचे श्री गुंसाईजी की भी बैठक है। श्री महाप्रभुजी को श्रीनाथ जी और श्री स्वामीजी ने बॉहजोटी किये श्री गिरिराज जी पर पधारते हुए दर्शन दिये। आप श्रीनाथजी के पास पधारे और तीन दिन बाद लौटे। श्री महाप्रभुजी राधाकुण्ड, कृष्णकुंड और आठ दिशा में जो आठों सखियों के कुण्ड हैं उनमें स्नान करके कुसुमोखर पधारे । यहां आपका उद्धवजी से मिलाप हुआ और उन्हें भ्रमरगीत के एक श्लोक का अर्थ लगातार बारह पहर तक समझाया।

बैठक 10 - श्री मानसी गंगा की बैठक, बल्लभघाट, चकलेश्वर के पास, पोस्ट गोवर्धन, जिला मथुरा (उ.प्र.)

मानसी गंगा के ऊपर आपकी बैठक है। वहाँ आपने श्री भागवत् सप्ताह पारायण किया। यहां कृष्णचैतन्य ने यह नियम ले रखा था कि जब तक सवा लाख भगवन्नाम पूरे नहीं हों किसी से बात नहीं करना-यह नियम छह माह से चल रहा था। एक दिन श्री महाप्रभुजी पधारे तब आपने तुरंत उठकर साष्टांग दंडवत की और अपना नियम तोड़कर आपसे बातचीत की। श्री कृष्ण चैतन्य का मनोरथ सिद्ध किया। उन्हें और साथ के सब वैष्णवों को दिव्यचक्षु द्वारा मानसी गंगा का आधिदैविक दुग्धमय स्वरुप के दर्शन करवाये।

श्री चक्रेश्वेर महादेवजी ने अपने पुजारी से कहा हम श्री महाप्रभुजी की भागवत कथा सुनने को जा रहा है, हम लौटें तब तुम पूजा करना। इस प्रकार चक्रेश्वर महादेवजी नित्य कथा सुनने को आते थे।

बैठक 11, श्री परासोली की बैठक, चन्द्र सरोवर, पोस्ट गोवर्धन, जिला मथुरा (उ.प्र.)

चन्द्रसरोवर से कुछ ही दूरी पर छोंकर के नीचे आपकी बैठक है। यहाँ आपने सात दिन तक भागवत् पारायण किया। चन्द्र कृप में स्नान किया और सब वैष्णवों को रासलीला के दर्शन करवाए। आपने एक वैष्णव के पूछने पर बतलाया कि जो वैष्णव गिरिराजजी की एक दिन में तीन परिक्रमा करे, बीच में कहीं बैठे नहीं तब श्री गिरिराज जी निज स्परुप का साक्षात दर्शन देते हैं। आपने गिरिराजजी के पांच प्रकार के स्वरुप बतलाये - (1) भुजंग स्वरुप (2) ग्वाल स्वरुप (3) सिंह स्वरुप (4) गाय स्वरुप (5) स्थूल स्वरुप

बैठक 12, श्री आन्योर की बैठक, सदु पांडे का घर, पोस्ट - आन्योर, जिला मथुरा (उ. प्र.)

महाप्रभुजी झारखंड से ब्रज में श्री नाथजी की सेवा की व्यवस्था करने के लिये पधारे थे, तब सदु पांडे के घर पर ही ठहरे थे। आन्योर में सदु पांडे के घर में आपश्री की बैठक है। यहाँ श्रीनाथजी और श्री महाप्रभुजी का मिलाप हुआ। श्री आचार्य जी छोटा सा मंदिर बनवाकर श्रीनाथजी को पास बैठाये हैं। श्री महाप्रभुजी ने यहां तीन दिन तक भागवत् पारायण किया। महाप्रभुजी एवं श्रीनाथजी के मिलन की घटना पुष्टिमार्ग की एक महत्त्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय घटना है।

बैठक 13, श्री गोविन्द कुंड की बैठक, पोस्ट आन्योर, जिला मथुरा (उ.प्र.)

यहां श्री महाप्रभुजी ने तीन दिन तक भागवत् पारायण किया। यहाँ श्री महाप्रभुजी ने कृष्णदास मेघन को गिरिराज की कंदरा में

व्यापी बैकुंठ तथा लीला सामग्री के दर्शन करवाये। कन्दरा में ही मथुरा कुंड पर माधुरि के वृक्ष पर सारस्वतकल्प का सुआ लगातार अष्टाक्षर मंत्र का जाप कर रहा था। श्री कृष्णदास मेघन के द्वारा अष्टाक्षर का जाप सुनकर उसकी मुक्ति हुई। श्री स्वामिनी का उसे वरदान था कि जिस दिन श्री आचार्य को सेवक आकर श्री कृष्ण स्मरण करेंगें उस दिन तेरो शुक शरीर छूटकर लीला में सहचारी होगा। चैतन्य महाप्रभु ने आचार्यश्री को 'कृष्णप्रेमामृत' ग्रंथ इस स्थान पर भेंद किया था।

बैठक 14, श्री सुंदरशिला की बैठक, गिरिराज, जी के सामने पोस्ट जतीपुरा, जिला मथुरा (उ.प्र.)

सुंदरशिला के सामने छोंकर के नीचे श्री आचार्यजी की बैठक है। यहां अपने श्री गोवर्धन पूजा करी, दीपमालिका करी और सवा सेर भात का अन्नकूट उत्सव किया। एक समय श्री दामोदरदास जी की गोद में सो रहे थे तभी श्रीनाथजी पधारे। तब दामोदरदास जी ने श्रीनाथजी को दूर ही खड़े रहने को कहा। श्री नाथजी दूर ही खड़े रहे लेकिन आपके नुपुर सुनकर श्री महाप्रभुजी जाग गये और श्रीनाथजी को अपनी गोद में बैठाकर श्री कपोल परसि के मुख चुंबन किए।

बैठक 15 श्री गिरिराज जी की बैठक, पोस्ट जतीपुरा, जिला मथुरा (उ.प्र.) (अप्रकट)

श्री गिरिराज के ऊपर श्रीनाथजी के मंदिर में एक चौतरी पर श्री महाप्रभुजी की बैठक है। यहाँ आप सेवा के अवकाश में बिराजते थे। एक समय आप श्रीनाथजी का श्रृंगार करके उस चौतरी पर विराज रहे थे। सामग्री तैयार नहीं थी अत: गोपी वल्लभ में देर लगी। उसी समय श्री स्वामिनी जी थाल लेकर पधारी। श्री आचार्यजी ने दामोदरदास से कहा श्रृंगार बाद गोपीवल्लभ में देर नहीं करना चाहिये। आचार्यजी ने यहां दो बार भागवत् पारायण किया और एक बार श्री गिरिराज जी की परिक्रमा की।

बैठक 16, श्री कामवन की बैठक, श्री कुण्ड, पो. कामा, जिला भरतपुर (राज.)

कामवन में सुरभि कुंड (श्रीकुंड) के ऊपर छोकर वृक्ष के नीचे श्री आचार्यजी की बैठक है। यहां आपने चोरासी कुण्ड में स्नान करके श्री भागवत् सप्ताह किया। सुरभि कुंड पर एक ब्रह्मपिशाच रात्रि में रहने वालों का भक्षण कर जाता। आप श्री जब वहां बिराज रहे थे तो अर्धरात्री को वह ब्रह्मपिशाच निकला। उसी समय एक वैष्णव धोती धोकर अपरस सुखा रहा था। आपने वही जल ब्रह्मपिशाच पर छिरका जिससे वह मुक्त हो, दिव्य शरीर धारण कर बैकुंठ को गया। इस प्रकार आपकी कृपा से सुरभि कुंड पर निर्भयता हुई।

बैठक 17, श्री गह्वरवन की बैठक जी, राधारानी के मंदिर के आगे, मोर कुटी के नीचे, पो. बरसाना, जिला मथुरा (उ.प्र.)

गह्वरवन में कुंड के ऊपर आप श्री की बैठक है। आपने यहां सात दिन विराजकर श्रीभागवत् पारायण किया। एक दिन गह्वरवन में एक बड़ा अजगर दिखाई दिया। उसको हजारों चींटे काट रहे थे। आपने बतलाया कि पूर्व जन्म में अजगर वृन्दावन का महंत था। उसने अपने बहुत शिष्य बनाये और बहुत द्रव्य इकट्ठा किया लेकिन सब विषय भोग में लगाया। भगवत् सेवा या भगवत् नाम में कुछ न लगाया अत: उद्धार न होकर महन्त को अजगर की योनि और जितने सेवक किये उन्हें चींटे की योनि मिली। हमें वृथा अपनो सेवक बनाये। श्री आचार्यजी ने कृपा कर अपने अंगुष्ठ को चरणोदक छिड़कवाकर उसका उद्धार किया।

बैठक 18, श्री संकेतवन की बैठक, बगीचे में, कृष्ण कुण्ड, पो. बरसाना, जिला मथुरा (उ.प्र.)

यह बैठक संकेत वन के समीप कृष्णकुंड के ऊपर छोकर के नीचे है। यहां आप श्री ने सात दिन का भागवत् पारायण किया। सात दिन तक आपकी भागवत में एक सोलह वर्षीय बहुत सुन्दर स्त्री अनेक आभूषण पहिले रत्न जटित दांड़ी को चमर लेके श्री महाप्रभुजी को चमर करती। जब कथा आरंभ होती हो आती और कथा समाप्त होते ही अंर्तध्यान हो जाती। तब वैष्णवों के पूछने पर श्री महाप्रभुजी ने बतलाया कि संकेत देवी को हमारे दर्शन की तथा सेवा की बहुत आरती थी से उन्हें यह प्राप्त हुई।

बैठक 19, श्री नंदगांव की बैठक, मानसरोवर, सड़क के उस पार, पोस्ट नंदगांव, जिला मथुरा (उ.प्र.)

नंदगांव में मान सरोवर के ऊपर श्री आचार्यजी की बैठक है। आप यहां छै: माह विराजे और आज्ञा की जो यहां उद्धवजी छै: माह विराजे है अत: हम भी छै: माह रह कर श्रीनंदरायजी को श्रीभागवत् सुनावेंगे। एक समय आचार्य श्री मान सरोवर पर बैठे थे तथी एक मुगल घोड़े को पानी पिलाने लाया। आपकी दृष्टिमात्र से घोड़े को मुक्ति मिली और वह चतुभुर्ज स्वरुप धारणकर विमान में बैठ कर बैकुंठ को गया। यह आश्चर्य देखकर मुगल ने सेवक बनने की विनती की। तब आप श्री ने अगले जन्म में वह नवानगर में एक मोची के घर में पैदा हुआ। जिसका नाम संगजीभाई था और उस पर श्री गुसाई जी की कृपा हुई।

बैठक 20, श्री कोकिलावन की बैठक, पोस्ट बठैन, जिला मथुरा (उ.प्र.)

कोकिलावन में श्री कृष्णकुंड के ऊपर छोकर के नीचे श्रीआचार्यजी की बैठक है। यहां पर निम्बार्क संप्रदाय के चतुरा नागा नामक एक संत ने अपने एक हजार शिष्यों

के साथ श्री महाप्रभुजी के दर्शन किये और महाप्रभुजी से आचार्य होने व अनेक शास्त्रार्थो में विजयी होने की खुशी में खीर का भोग देने का प्रस्ताव किया। आपने कृष्णदास मेघन से पांच सेर दूध मंगवाया और खीर तैयार की। श्री महाप्रभुजी की दृष्टि मात्र से वह खीर अक्षय हो गई। सभी हजार नागाओं ने भर पेट प्रसाद लिया फिर भी पांच सेर खीर ज्यों की त्यों रही। उसने दंडवत कर अपना सेवक बनाने की विनती की। तब आपने कहा कि हमारे नाती श्री गोकुलनाथजी होंगे उनके तुम सेवक होंगे।

बैठक 21, श्री भांडीरवन की बैठक, जिला मथुरा (अप्रकट)

भांडीरवन में श्री महाप्रभुजी ने सात दिन तक श्री भागवत् पारायण किया। यहां एक माध्व संप्रदाय का व्यासतीर्थ स्वामी महंत रहता था। उसने श्री आचार्यजी से कहा कि आप माध्व संप्रदाय की गादी पर आरुढहोईये। आपने उससे कहा कि इसका जवाब हम कल देंगे। आधी रात के समय कोई चार जने मुग्दर ले उसे बहुत मारने लगे लेकिन दिखे कोई नहीं। उन मारने वालों ने कहा कि हम श्री महाप्रभुजी के दूत है अपना भला चाहे तो श्री महाप्रभुजी के पांव पड़। प्रात:काल वह महंत आय के श्री महाप्रभुजी के पांव में पड़ा और बोला मुझे क्षमा करो, मैने आपका स्वरुप नहीं जाना। मुझे अपनी शरण में लो। तब आपने उसे अपनी शरण में लिया।

बैठक 22, श्री मानसरोवर की बैठक, (माहान), पो. भाट, जिला मथुरा (उ.प्र.)

यहां आपने तीन दिन तक भागवत पारायण किया। यहां श्री दामोदरदास हरसानी को अर्धरात्रि के समय श्री महाप्रभुजी ने पुरुषोत्तम क्रांति स्वरुप के दर्शन दिये और देखा कि श्री स्वामिजी को मानमोचन के बाद श्रीमहाप्रभुजी श्रीनाथजी के पास पधराकर ला रहे हैं। तत्पश्चात आप विश्रामघाट पधारे और वहां ब्रज परिक्रमा पूर्ण की। उजागर चौबे को सौ रुपये दक्षिणा के दिये।

बैठक 23, सूकर क्षेत्र की बैठक, सोरम घाट, पोस्ट सौरो, जिला अटौहा (उ.प्र.)

सूकर क्षेत्र (सोरमजी) में श्री आचार्यश्री ने एक सप्ताह तक भागवत् पारायण किया था। यहीं पर श्रीकृष्णदास मेघन के पूर्व गुरु रहते थे। जब उनके दर्शन को कृष्णदास श्री आचार्यजी की आज्ञा के बिना गये तब वा गुरु ने कहा - अरे कृष्णदास? तु मेरा सेवक होकर श्री आचार्यजी का सेवक क्यों हुआ। तब कृष्णदास ने श्री महाप्रभुजी की महिमा का वर्णन किया और महाप्रभुजी को ''पूर्ण पुरुषोत्तम'' बताया। जब गुरु ने प्रमाण मांगा तो कृष्णदास ने धधकती अग्नि हाथ में लेकर यह कहा कि श्री महाप्रभुजी पूर्ण पुरुषोत्तम हो तो मेरा हाथ नहीं जलेगा। काफी समय तक अग्नि हाथ में रखकर श्री महाप्रभुजी का माहात्म्य सिद्ध कर दिखाया।

बैठक 24, श्री चित्रकूट की बैठक, कामतानाथ पर्वत पोस्ट पिली कोठी, (म.प्र.)

चित्रकूट में श्री रामचन्द्रजी ने चातुर्मास किया था अत: श्री महाप्रभुजी ने श्री भागवत का पारायण करके 16 दिन तक रामायण का पाठ किया। चित्रकूट के समीप कान्तानाथ पर्वत है। कान्तानाथ पर्वत ने ब्राह्मण का वेश धारण कर श्री महाप्रभुजी से विनती कि श्री

राम जानकी मेरे शिखर पर विराजते है। उन्होंने आज्ञा की कि तुम जाकर महाप्रभुजी से कहो-हमें भूख लगी है कुछ सामग्री ले के पधारे। आपकी आज्ञा से दामोदरदासजी ने केले की फरी तैयार की जिसे लेकर महाप्रभुजी पर्वत के शिखर पर पधारे। आपने देखा कि एक शिला पर श्रीराम और श्री जानकी विराजे है, श्री लक्ष्मणजी शेष रुप छाया कर रहे है। श्री हनुमानजी हाथ जोड़े खड़े है।

बैठक 25, श्री अयोध्या की बैठक, गुसांई घाट

अयोध्या में सरयू के तीर गुसांई घाट पर श्री महाप्रभुजी की बैठक है। एक समय श्री महाप्रभुजी श्री रामचन्द्रजी की बैठक में मिलने को पधारे और मर्यादा पुरुषोत्तमाय नम: कहा। यह सुनकर हनुमानजी को बहुत संदेह हुआ लेकिन मन में ही रखा। संदेह को समझकर श्री रामचन्द्रजी ने कुछ सामग्री देकर श्री हनुमानजी को श्री आचार्यजी के पास भेजा। श्री हनुमानजी ने देखा श्री महाप्रभुजी श्री रामचन्द्र जी का स्वरुप धर कर बैठे हैं तब हनुमानजी ने दण्डवत की। पुन: संदेह होने पर श्री रामचन्द्रजी ने कहा ये मेरो स्वरुप धर सके लेकिन मैं इनको स्वरुप नहीं धर सकूं। इसका तात्पर्य यह है कि श्री रामचन्द्रजी श्री पुरुषोत्तम के श्री मुख से प्रगट हास्य का अवतार हैं और श्री महाप्रभुजी तो पूर्ण पुरुषोत्तम के मुखारविन्द के अधिष्ठाता अलौकिक आनंदमय अग्निरुप हैं।

बैठक 26, श्री नैमिषारण्य की बैठक, वेद व्यास आश्रम के सामने, नैमिषारण्य (उ.प्र.)

(लखनऊ से बालामऊ जक्शन होते हुए नैमिषारण्य जाना होता है। बालामऊ से नैमिषारण्य 13 मील की दूरी पर है।)

नैमिषारण्य क्षेत्र में गोविन्दकुंड के ऊपर छोकर वृक्ष के नीचे आपकी बैठक है। यहां आपने सात दिन तक श्रीभागवत् का परायण किया। एक दिन आप अदृश्य अठ्यासी हजार शौनकादिक ऋषि यज्ञ कर रहे थे वहां पधारे। वहां सब ब्राह्मणों ने आपको आसन पर बैठाकर बहुत पूजा की। वहां श्री महाप्रभुजी ने ऋषियों को भागवत् के एक श्लोक 'नैष्कर्म्यमप्यच्युत भाववर्जितम्" की व्याख्या तीन पहर तक सुनायी।

बैठक 27, श्री काशीजी की पहली बैठक, पुरुषोत्तमदासजी का घर, जतन बड़, चैतन्य रोड़, दूध हट्टी के पास, वाराणसी

श्री काशी में सेठ पुरुषोत्तमदास के घर श्री महाप्रभुजी की बैठक है। यहीं पर आपने पहला नंदमहोत्सव किया। उस समय श्री नंदरायजी, श्री यशोदाजी, ब्रज भक्त आदि साक्षात स्वरुपात्मक पधारे। वहां श्री विश्वेश्वरजी महादेवजी दर्शन को पधारे। यहीं पर आपने 'अणुभाष्य' की रचना की। पत्रावलंबन की रचना कर मायावादी पंडितो को निरुत्तर किया। निराकार ब्रह्म के मत का खण्डन कर साकार ब्रह्म का स्थापन किया।

बैठक 28, श्री काशीजी की दूसरी बैठक, पंचघाट

संन्यास ग्रहण कर आप काशी में हनुमान घाट पर आकर रहे। आप एक माह तक एक शिला पर अन्न जल सब त्याग कर विराजे रहे। तब किसी ब्राह्मण ने पूछा आपने सन्यास ग्रहण उपदेश कौन से लिया तब आपने ''सन्यास निर्णय" ग्रंथ लिखकर दिया जिसे पढ़कर वह निरुतर हो गया। यहीं गंगाजी की रेत में आपने सुप्रसिद्ध 'शिक्षा श्लोक' लिखे। आषाढ़ सुदी 3 के दिन पुष्य नक्षत्र के अभिजित काल में री गंगाजी के जल में आप विराजे उस समय चालीस हाथ का एक तेज अग्नि पुंज बना जो सब काशी के लोगों ने देखा इस प्रकार श्री महाप्रभुजी स्वधाम पधारे। गंगाजी के जल में आप विराजे उस समय चालीस हाथ का एक तेज अग्नि पुंज बना जो सब काशी के लोगों ने देखा इस प्रकार श्री महाप्रभुजी स्वधाम पधारे।

बैठक 29, हरिहर क्षेत्र की बैठक, महादेवजी के मंदिर के पास, मगरहट्टा चौक, हाजीपुर, पटना, जिला वैशाली (बिहार)

गंगाजी और गण्डकी के संगम पर भगवदीय भगवानदास के घर में यह बैठक है। श्री आचार्यजी यहां अखंड विराजमान है। जब

आचार्यजी भगवान दास के घर से अडेल आने का कहते तो भगवानदास जी मूर्छा आ जाती तब आचार्यश्री ने आपको पादुकाजी दी और नित्य दर्शन देने का बचन दिया। जिस चोतरे पर काशी में जब आसुरव्यामोहलीला दिखाई तब सब वैष्णव मिल कर भगवानदासजी के घर आए और सब वृतान्त कह सुनाया। तब भगवानदास ने बैठक का टेरा खोला तब सबको श्री आचार्य के साक्षात दर्शन हुए।

बैठक 30, जनकपुर की बैठक, माणिक बाग (अप्रकट)

यह बैठक जनकपुर में माणिकतालाब के ऊपर भगवानदासजी के बाग में है। यहां श्री राम जानकीजी ने गठ जोरे से स्नान किया और यहीं श्रीरामजी की बारात उतरी थी। यहां श्री महाप्रभुजी ने सप्ताह पारायण किया। विष्णुस्वामी संप्रदाय के केवलराम नागा एवं उसके 500 शिष्यों को आचार्य श्री ने नाम सुनाया और एक दिन पहले रामनवमी की बची हुई बासौंधी (रबड़ी) के एक डबरा से सभी नागाओं को भोजन करवा दिया। यह सब देखकर बाग का माली आश्चर्यचकित हुआ और सारी बात जाकर बाग के मालिक भगवानदासजी को बतलाई। तब भगवानदासजी ने आकर दण्डवत की और सेवक बने।

बैठक 31, गंगासागर, कपिल कुण्ड

यहां कपिल आश्रम में कपिलकुंड के ऊपर छोकर वृक्ष के नीचे श्री आचार्यजी की बैठक है। यह वन सिंह गजराज, गेंडा, हिरण आदि जंगली जानवरों से भरा पड़ा था। आपके चरणारविंद की अलौकिक गंध से यह जीव मनुष्य यौनि को प्राप्त हुए। आप यहां छैः माह तक विराजे। यहां आपने तृतीय स्कंध की सुबोधिनीजी पूर्ण की। इसी स्थल पर आपको देह - त्याग की भगवत् आज्ञा हुई यहीं पर धान के मुरमुरा कृष्णदास मेघन अलौकिक रीति से गंगापार करके लाये और श्री आचार्यजी को आरोगाये।

बैठक 32, चम्पारण्य की पहली बैठक, राजिम से 8 किमी., जिला रायपुर (म.प्र.)

यह श्री महाप्रभुजी के प्राकट्य स्थल की बैठक है। यज्ञ नारायण भट्टजी ने प्रथम सोमयज्ञ किया तब यज्ञ के कुण्ड से भगवत् आज्ञा हुई कि तुम्हारे वंश में जब 100 सोमयज्ञ पूर्ण हो जावेंगे तब साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम का प्रादुर्भाव होगा। उस कुण्ड में से श्री मदनमोहनजी स्वरुप भी प्रगट हुआ जो अब सात स्वरुप में श्री गोपाललालजी महाराज के माथे कामवन में विराज रहे हैं। आपने 32 सोमयज्ञ किये। बाद में उनके पुत्र गंगाधर भट्ट ने 28 सोमयज्ञ जिनके पुत्र श्री गणपति भट्ट ने 30 सोमयज्ञ जिनके पुत्र वल्लभ भट्ट ने 5 जिनके पुत्र श्री लक्ष्मण भट्टजी ने 5 सोमयज्ञ किये। 100 यज्ञ पूर्ण होने पर स. 1535 वैशाख मास कृष्ण एकादशी को चम्पारण्य में आपका प्राकट्य हुआ।

बैठक 33, चम्पारण्य की दूसरी बैठक, छटी की बैठक

इस स्थान पर श्री महाप्रभुजी के प्राकट्य के बाद छटी का पूजन हुआ था। इस अवसर पर काशी से माधवेन्द्रयति और पुष्कर से मुकुन्द दास आए थे, उन्हें छटी पूजन के समय अलौकिक ब्रजलीला के दर्शन हुए थे। साधन की सम्पत्ति से हरि किसी पर प्रसन्न नहीं होते। भक्तों के लिए दीनता ही भगवान् को प्रसन्न करने का एकमात्र साधन है।

बैठक 34, जगन्नाथपुरी की बैठक, हजारीमल दूधवाले की धर्मशाला के पास, ग्रान्ड रोड, पुरी (उड़ीसा)

यह बैठक जगन्नाथपुरी के दक्षिण दरवाजे के पास है। यहाँ आप एक वर्ष तक विराजे। यहाँ के राजा विष्णुदेव के दरबार में बहुत से पंडितों में विवाद हुआ कि मुख्य देव, मुख्य शास्त्र, मुख्य तंत्र एवं मुख्य कर्म क्या हैं? जब विवाद हल न हुआ तो राजा श्री महाप्रभुजी के पास आये। तब महाप्रभुजी ने आज्ञा दी कि एक कोरा कागज कलम श्री जगन्नाथजी के मंदिर में रख दो वहीं से जबाब आ जावेगा। तब श्री जगन्नाथजी ने यह श्लोक लिख दिया - एकं शास्त्रं देवकीपुत्र गीतमेको देवो देवकीपुत्र एव।
मंत्रोऽप्येकस्तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा।।

बैठक 35, पंढरपुर, चन्द्रभागा नदी के तट पर, महाराष्ट्र

(मध्य रेल्वे की कुर्दवाड़ी मिरज नेरोलाईन पर कुर्दवाड़ी से पंढरपुर 53 किमी. है।) पंढरपुर क्षेत्र में भीमारथी के तीर पर

श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। बैठक के पीछे शमी वृक्ष के चबूतरे पर भगवान श्री विट्ठलनाथजी और महाप्रभुजी का मिलन हुआ था। तब आपने मिश्री भोग धराकर अबीर से खिलाया था। कृष्णदेवराजा द्वारा भेंट थाली भर सोने की मुहर में से सात मुहर देवी द्रव्य की ली थी उनके नूपुर सिद्ध कर श्री विट्ठलनाथजी को अंगीकर करवाए। यहीं पर श्री महाप्रभुजी को विवाह करने की भगवत आज्ञा हुई थी। उन्हें यह प्रेरणा मिली थी कि भगवान पुत्र रुप में पधारना चाहते हैं।

बैठक 36, नासिक, परसरामपुरिया मार्ग, पूसा, पंचवटी

यहां श्री रामचन्द्र जी ने तपस्या की और श्रीसीताजी का हरण यहीं से हुआ। पंचवटी में गोदावरी नदी के घाट के समीप श्री महाप्रभुजी की बैठक है। यहाँ आपश्री ने भागवत् सप्ताह की। आपश्री के झारी और लोटा आज भी है। नासिक क्षेत्र के मायामत के पंडितों को शास्त्रार्थ करके हराया और भक्ति मार्ग का स्थापन किया। उन पंडितों पर कृपा कर उन्हें अपना सेवक बनाया।

बैठक 37, पना नृसिंह, मंगलगिरि, रेल्वे स्टेशन, विजयवाड़ा (अप्रकट)

पना नृसिंह में छोकर वृक्ष के नीचे श्री आचार्य ने भागवत् पारायण किया। यहां श्रीनृसिंह भगवान और आचार्य श्री का मिलन हुआ। आपश्री ने पना सिद्ध करके भगवान नृसिंह को भोग धरा। यहाँ आपश्री ने भागवत् सप्ताह किया। श्री आचार्यजी की भागवत कथा श्रवण करने श्री नृसिंह जी नित्य पधारते थे। (पना नृसिंहजी को बहुत प्रिय है।)

बैठक 38, श्री लक्ष्मणबालाजी, कर्नाटक धर्मशाला (छत्रम्) के बाजू में, तिरुपति (आन्ध्र)

श्री लक्ष्मण बालाजी का श्रृंगार करते समय आपके पिता श्री लक्ष्मण भट्टजी श्री मुख में लीन हो गये थे। सूतक निवृत्त पीछे छोकर आपने वृक्ष के नीचे भागवत् पारायण प्रारम्भ किया। तब श्री बालाजी पधारे और कहा-आपके श्रीमुख से कथा सुनने की बहुत अभिलाषा है तब श्रीमहाप्रभुजी ने आपको आसन दिया। भागवत् समाप्ति पर आचार्यजी ने मनोहर के लड्डु का भोग बालाजी को लगाया। तब बाँह पकड़ श्री महाप्रभुजी के संग-संग भोजन किया। तिरुपति लक्ष्मणबालाजी के मंदिर के पास पुष्कर कुंड पर यह गुप्त बैठक है ।

बैठक 39, नासिक, श्री रंगजी, त्रिचनापल्ली (दक्षिण रेल्वे के तिरुचिरापल्ली स्टेशन के पास)

यह बैठक श्रीरंगजी में कावेरी नदी के तट पर छोकर वृक्ष के नीचे है। श्री रंगजी के पूछने पर श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता सविस्तार बताई। जब आचार्यश्री मंदिर में पधारे तब मुखिया आनंदराम ने विनती की कि ठाकुरजी का श्रृंगार आप धराईये। ऐसी श्री ठाकुरजी की आज्ञा मुझे हुई हैं। तब आपश्री ने श्रीरंगजी को श्रृंगार किए तब मुखिया को महा अलौकिक दर्शन हुए।

बैठक 40, विष्णुकांची, कांचीपुरम (तमिलनाडु)

(दक्षिण रेल्वे के चेंगलपेट - आरकोनम छोटी रेल्वे लाईन पर कांजीवरम् रेल्वे स्टेशन है।) विष्णु की साड़े तीन पुरी में आधी पुरी विष्णु कांची है। (बाकी-1 मथुरापुरी, 2 अयोध्यापुरी, 3 द्वारिकापुरी है) यहां सुरभि नदी पर छोकर वृक्ष के नीचे आपने विश्राम किया था। यहां के स्वामी वरदराज के मंदिर की सीढ़ियों पर जयदेव की अष्ट पदी ''गीत गोविन्द'' उत्कीर्ण है। अत: आप सीढ़ियों से चढ़कर मंदिर में नहीं गये। नीचे से ही दर्शन किया। इस प्रकार आपने दिव्य रसमयी कृति पर पैर न रखकर आदर व्यक्त किया। मंदिर के मुखिया श्री हस्तराम को आचार्यश्री ने सात मुद्रा दी और कहा इसकी सामग्री वरदराज स्वामी को धराओ। तब वरदराजजी ने कहा मुझे ढोकला की सामग्री सिद्ध कर अरोगाओ।

बैठक 41, सेतुबन्ध, रामेश्वर

सेतुबन्ध रामेश्वर में छोकर वृक्ष के नीचे भागवत् सप्ताह पारायण किया। आपने कृष्णदास मेघन से कहा था कि रामेश्वरजी भगवान श्री रामचन्द्रजी के स्परुप है। श्री रामेश्वरजी नित्य भागवत् कथा श्रवण करने पधारते थे। कथा समाप्ति के पश्चात आपने पुरोहित को बुलाकर विधिपूर्वक तीर्थक्षेत्र में स्नान किया।

बैठक 42, मलयाचल पर्वत की बैठक, उटकमंड के पास, तमिलनाडु (अप्रकट)

यहां आचार्यजी ने चंदन वृक्ष के नीचे भागवत् सप्ताह पारायण किया। यहां श्री हेमगोपालजी ठाकुरजी विराजते है उनसे श्री महाप्रभुजी का मिलन हुआ। फिर श्री हेमगोपालजी के पूछने पर श्रीनाथजी की प्रागट्यवार्ता बताई। अरगजा सिद्ध का ठाकुरजी को समर्पी और केला तथा नारियल की सामग्री आरोगाई। श्री ठाकुरजी की कृपा से इन्द्र को यहां श्री आचार्यश्री के दर्शन हुए। यहां आसपास चंदन का घना वन है।

बैठक 43, लोहगढ़की बैठक, (हरी) फास के सामने, पणजी, गोआ

लोहगढ़ा जिसे अब कोंकण गोवा कहते है। यहां छोकर वृक्ष के निचे आपश्री ने भागवत् सप्ताह परायण किया। आपने कृष्णदास मेघन को एक बड़ी गुफा में अप्सरा कुंड, गंधर्व कुण्ड एवं देवता कुंड जो गुप्त थे बताये। जहां प्रति पूर्णमासी के दिन क्रमश अप्सरा, गंधर्व एवं देवता स्नान करने आते है। आपने यहां हजारों जीवों का उद्धार किया।

बैठक 44, श्री ताम्रपर्णी नदी की बैठक, तिरुनेवली रेल्वे स्टेशन के पास (अप्रकट)

यहां आपने छोंकर के नीचे भागवत् पारायण किया। यहां का राजा बहुत बीमार था। सब उपाय कर लिये लेकिन राजा ठीक नहीं हुआ। अंत में एक पंडित ने सलाह दी कि यदि राजा अपने बराबर सोने का पुतला बनाकर दान करें तो राजा बच जायगा लेकिन दान लेनेवाला मर जाएगा। राजा ने पुतला बनवाया और ब्राह्मणों को दान लेने के लिये बुलाया लेकिन ब्राह्मणों को वह पुतला महा विक्राल का रुप दीखे। कोई ब्राह्मण उसे स्वीकार नहीं किया। यह खबर श्रीआचार्यजी को मिली। तब आपने पुतला दान लेने का संकल्प किया। आपने वह दान स्वीकार कर उस पुतले के हजारो टुकड़े करवाकर जो हजारों ब्राह्मण एकत्र हुये थे उनमें बँटवा दिए।

बैठक 45, श्री कृष्णा नदी की बैठक (अप्रकट)

यहां पीपल के वृक्ष के नीचे आपने श्री भागवत् सप्ताह परायण किया। यहां चारों और तैलंग ब्राह्मण मायावादियों का जोर था। आपने उनमे शास्त्रार्थ कर मायावाद का खंडन तथा भक्ति मार्ग की स्थापना की। मायावादियों ने कहा हमको शरण में लिजीये तब आपने उनसे कहा रूद्राक्ष उतार कर नदी में स्नान करके आओ। आपने कृपा कर सब को नाम सुनाकर तुलसी की माला पहराई सब पंडित दण्डवत कर शरण में आये।

बैठक 46, पंपा सरोवर, हासपेट विद्यानगर से 8 किमी. (अप्रकट)

पंपासरोवर पर वट वृक्ष के नीचे आपश्री ने भागवत् सप्ताह परायण किया। कई तामसी जीवों का उद्धार किया। यहीं रामावतार के समय से बैठा एक पक्षी, जो बहुत दु:ख पा रहा था, उसने अपने उद्धार की विनती की। तब आपश्री की कृपा से कृष्णदास मेघन ने चरणोदक उस पक्षी पर छिरका। उसी समय उसकी पक्षी योनि छूट गई और देवी स्वरुप हुआ। उसी समय बैकुंठ से विमान आया और वह देवी स्वरुप उसमें बैठकर बैंकुंठ गया।

बैठक 47, श्री पद्मनाथ, पौढ़ानाथ, त्रिवेन्द्रम (कन्याकुमारी से 75 किमी.) (अप्रपट)

यह बैठक शमी वृक्ष के नीचे है। आप जब यहां पधारे तब भगवान श्री पद्मनाथजी ने अपने मुखिया आनंदराम से कहा कि जाओ श्रीमहाप्रभुजी को भक्तिमार्ग की रीत से विरती करके मंदिर में पधराय आओ। श्रीमहाप्रभुजी मंदिर में पधारे। श्री पद्मनाथजी परस्पर भोजन करते हुए अलौकिक दर्शन हुए। श्री महाप्रभुजी ने यहाँ श्रीमद् भागवत् सप्ताह पारायण किया।

बैठक 48, श्री जर्नादन की बैठक, पो. बरकला (केरल)

(विरूधनगर-त्रिवेन्द्रम छोटी लाईन पर त्रिवेन्द्रम से 51 किमी. पर बरकला स्टेशन है। जहाँ से 3 किमी. पर जर्नादन गांव है। बैठकजी मूलजी जेठानी गुजराती धर्मशाला से आधा किमी. है।) यह बैठक जनार्दनजी में कुडं के पास शमी वृक्ष के नीचे है। यहां आचार्यश्री ने भागवत् सप्ताह की। तथा भगवान श्री जनार्दनजी की सेवा एवं श्रृंगार किए तथा सामग्री भोग धरी। यहां श्री जनार्दन जी को आचार्यश्री ने श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता सुनाई।

बैठक 49, श्री विद्यानगर की बैठक (अप्रकट)

यह बैठक विद्यानगर में विद्याकुंड ऊपर है। यहां आचार्य श्री ने राजा कृष्ण देव के दरबार में मायामत का खंडन किया और ब्रह्मावाद का स्थापन किया। राजा ने सात मन सोने का सिंहासन बनवाकर रखा था और कहा था कि जो मायामत खंडन कर ब्रह्मवाद का स्थापन करेगा उसको इस सिंहासन पर पधराकर कनकाभिषेक करुंगा। सो राजा ने दिग्विजय होने पर आचार्य श्री को कनकाभिषेक कराया। राजा ने थान भर स्वर्ण मुहर आपको भेंट की लेकिन आपने सिर्फ सात मुहर स्वीकार करके बाकी सब ब्राह्मणों में बंटवा दी। उन सात मुहरों की श्री जगन्नाथजी के लिये कटिमेखला सिद्ध करवाई। यहां विष्णुस्वामी के शिष्य श्री विल्वमंगलजी (उम्र 750 वर्ष) ने आचार्य श्री का विष्णुस्वामी की ओर से तिलक किया और विष्णु स्वामी सम्प्रदाय के आपश्री दीक्षित गादीधर भये।

बैठक 50, श्री त्रिलोकभानजी की बैठक

यह बैठक छोकर वृक्ष के नीचे है। यहां भी बहुत से मायावादियों को निरूतर किया और भक्ति मार्ग का स्थापन किया। कई ब्राह्मणों को आपने अपनी शरण में लिया। यहां श्री त्रिलोकभानजी के मंदिर में पधारकर श्री ठाकुर को श्रृंगार धराया। मेवा सिद्ध कर आरोगाये। यहां अभी तक बैठक का स्नान सुनिश्चित नहीं हो पाया है।

बैठक 51, श्री तोताद्री पर्वत, नांगुनेरी, तिरूनोल्ली रेल्वे स्टेशन

तोताचल पर्वत के पास घने वन में एक वट के नीचे आचार्यश्री विराजे। तब कृष्णदास मेघन ने विनती करी - जो महाराज यहां आसपास दूर तक जल नहीं है। तब आपश्री ने एक शिला बताई जिसके उठाने पर सुन्दर सा कुंड निकला जिसका नाम वल्लभकुंड रखा। यह चमत्कार सुनकर उस इलाके के मायावादियों ने आकर साष्टांग दंडवत कर विनती की कि हमें भी शरण में लीजिये। तब आपश्री ने उन्हें नाम निवेदन कराय तुलसी की माला पहराई। यहां आपने भागवत् सप्ताह पारायण किया।

बैठक 52, श्री दर्भशयनजी की बैठक, आदिसेतु (तमिलनाडु) रामनाथपुरम से 10 किमी. दूर (अप्रकट)

यह बैठक अति विकट स्थल पर है यह स्थल रामनाथपुरम् से दस किलो मीटर दूर आदि सेतु नामक गाँव मेह है। यहाँ दर्भ शय्या पर शयन करते हुए भगवान विष्णु का विशाल मंदिर है। आप श्री ने यहां भागवत् सप्ताह किया। श्री ठाकुरजी ने आप को यह आज्ञा दी थी कि आपके वंश में सब पुरुषोत्तम होंगे।

बैठक 53, श्री सूरत की बैठक, अश्विनी कुमार घाट, सूरत, गुजरात

अपनी पृथ्वी परिक्रमा के दौरान एक बार महाप्रभुजी कांकरवाड़ से पंढरपुर होते हुए सूरत पधारे। यहाँ ताप्तीजी के किनारे अश्विनी कुमार आश्रम के पास श्री महाप्रभुजी के बैठक है। ऐसी मान्यता है कि आप श्री के भागवत् पारायण के समय ताप्तीजी स्वयं सुन्दर महिला का रूप धारण कर आपश्री की सेवा करती थी।

बैठक 54, श्री भरुच की बैठक, पावर हाउस के पास, जिला. कचहरी के पिछे, भरुच (गुजरात)

भृगु क्षेत्र में परम पवित्र श्री नर्मदाजी के किनारे छोकर वृक्ष के नीचे श्रीमद् वल्लभाचार्यजी की बैठक है। यहाँ पर श्री नर्मदाजी स्वयं स्त्रीरूप धारण कर आपके दर्शनों के लिये पधारी थी। यहाँ पर भी महाप्रभुजी का मायावादी पंडितों से शास्त्रार्थ हुआ था। बाद में सभी पंडितों ने आपश्री की शरण ग्रहण की।

बैठक 55, श्री मौरवी की बैठक, मच्छु नदी के सामने का घाट, मौरबी, सौराष्ट्र

मोरबी महाराज मयूर ध्वज की नगरी है। यहां श्री महाप्रभुजी ने भागवत् सप्ताह पारायण किया। कुण्ड के ऊपर छोकर वृक्ष के नीचे आप श्री की बैठक है। यहां प. भ. बाला और बांदा बांदा बंधुओं को शरण में लिया था। जिस समय बादा महाप्रभुजी के पास पहुंचे तब महाप्रभुजी भ्रमर गीत का प्रसंग सुना रहे थे। यह सुनकर बादा भाव विभोर हो गये। और पत्नी सहित सेवक बन गये। महाप्रभुजी

ने बाला का नाम बालकृष्णदास और बादा का नाम बादरायणदास रखा।

बैठक 56, नवानगर की बैठक, नागमती नदी का घाट, कालाबड़ गेट रोड़ - जामनगर

नागमती नदी के तीर पर छोकर वृक्ष के नीचे श्री महाप्रभुजी विराजते थे। यहीं पर आपने श्रीमद् भागवत् का पारायण किया। नवानगर के राजा जामतमांची को आपश्री ने शरण में लेकर निर्भीकता पूर्वक राज्य संचालन का आशीर्वाद दिया। नवानगर को जामनगर भी कहते है। महाप्रभुजी की आज्ञा से शुभ मुहुर्त में नवसागर जाम नगर नामक नगर की बसावट हुई।

बैठक 57, स्वंभालिया स्टेशन रोड़, कुंभ के ऊपर, स्वंभालिया, जिला जामनगर व्हाया द्वारका

जाम स्वम्बालिया में परम कृपाल श्री वल्लभाचार्यजी एक कुन्ड के ऊपर छोकर वृक्ष के नीचे विराजित होकर श्रीमद् भागवत् का पारायण करते थे। यहाँ एक सप्ताह तक आपश्री का निवास रहा। परम भगवदीय श्री कृष्णदास मेघन ने आप श्री के चरणोदक से यहां प्रेत की मुक्ति की है।

बैठक 58, पिण्डतारक, पो. पिंडरा, जि. जामनगर, व्हा. द्वारका

दुर्वासा ऋषि के वास स्थल पिण्ड तारक में छोकर वृक्ष के नीचे आपश्री ने भागवत् पारायण किया। यहां के तीर्थ पुरोहित को आशीर्वाद दिया कि - जाकी तू पीठिका पे हाथ धरेगो-ताके हाथ से पिण्ड तरेंगे। ऐसी मान्यता है कि यहाँ तीर्थराज ब्राह्मण का रुप धारण कर आपकी कथा सुनने अते थे।

बैठक 59, मूलगोमती, व्यवस्था (पुरीमावती) देवी दास नाथूराम, नीलकंठ चौक, गोमती व्हाया द्वारका

पुण्य सलिला गोमतीजी के किनारे महाप्रभुजी की बैठक है। श्री गोमतीजी जलरुप में बैकुण्ठ से द्वारिका पधारी हैं। यहाँ विष्णुस्वामी मत के एक सन्यासी ने आपश्री से शरण में लेने की प्रार्थना की। वह नित्य श्री द्वारकानाथजी के दर्शन करता था व भागवत का पाठ करता था। महाप्रभुजी ने उससे कहा कि तुम अगले जन्म में ब्रज में हरजी ग्वाल बनोगे तब श्री गुँसाई जी तुम्हारा उद्धार करेंगे।

बैठक, 60 श्री द्वारिका की बैठक, गोमती नदी के किनारे, द्वारका

द्वारिका में गोमतीजी के तट पर छोकर वृक्ष के नीचे आप श्री की बैठक है। यहां स्वयं श्री द्वारकाधीशजी की आज्ञा पर आपने चातुर्मास किया। जब महाप्रभुजी द्वारका पधारे तो श्री द्वारकाधीशजी ने अपने सेवक गोविन्ददास ब्रह्मचारी को श्री महाप्रभुजी को बुलाने भेजा। तब श्री महाप्रभुजी ने पधारकर श्री द्वारकाधीश जी का श्रृंगार किया, भोग धरा तथा आरती की। आपने चातुर्मास में सुबोधनीजी के फल प्रकरण की टीका की तथा अन्नकूट व प्रबोधिनी द्वारका में ही की।

बैठक 61, श्री गोपी तलैया की बैठक, जिला जामनगर, व्हा. द्वारका

यह बैठक गोपी तलैया में छोकर के वृक्ष के नीचे है। ब्रज की सब कुमारिकाओं ने यहां श्री कृष्ण के संग रास किया और लीला में प्रवेश किया। आपश्री ने यहाँ सप्ताह पारायण किया और उपस्थित सब वैष्णवों को दिव्य चक्षु देकर कुमारिकाओं के साथ श्री कृष्ण के अलौकिक रास के दर्शन कराए।

बैठक 62, शंखोद्वार की बैठक, शंख तालाब भेट द्वारका जिला जामनगर

शंखासुर दैत्य का वध करके श्री प्रभु ने इस स्थल पर शंख प्राप्त किया था। यहां श्री शंखनारायण जी बिराजते हैं। शंख तलैया के किनारे छोकर वृक्ष के नीचे श्री महाप्रभुजी की बैठक है। श्री महाप्रभुजी ने यहां श्रीमद् भागवत् सप्ताह की थी। श्रीमद् भागवतान्तर्गत वेणुगीत के एक श्लोक पर तीन दिनों तक प्रवचन किया था। ऐसी मान्यता है कि यहाँ साक्षात शंखनारायण आपकी कथा सुनने के लिए पधारते थे। मानसी सेवा सर्वोपरि है, इसकी सिद्धि से सर्वज्ञता प्राप्त होती है।

बैठक 63, नारायण सरोवर, तह. करवपत, जिला कच्छ (कच्छ की राजधानी भुज है जहां से 135 किलोमीटर पर नारायण सरोवर है।)

नारायण सरोवर पर माकेण्डेय ऋषि के आश्रम के पास शमी वृक्ष के नीचे आपने भागवत् पारायण किया था। नगर हटा के दीवान श्री

नारायण दास लोहाना यहीं पर शरण में आए थे। आपश्री सरस्वती नदी को पार नहीं करते थे। इसलिए आप उस पार सिंध देश में नहीं गये। नारायण सरोवर में से श्री आदिनारायण भगवान चतुर्भुज रुप स्वयं प्रकटे है।

बैठक 64, जूनागढ़की बैठक, दामोदर कुण्ड, गिरनार रोड़, जूनागढ़

यहां गिरनार और रेवत पर्वत ब्राह्मण रुप में आये और श्री महाप्रभुजी से भागवत् कथा सुनाने की प्रार्थना की। आचार्यश्री ने रेवती कुन्ड के पास शमी वृक्ष के नीचे भागवत सप्ताह किया। यह भी मान्यता है कि महाभारत काल के द्रोणाचार्य के पुत्र चिरजीवी अश्वत्थामा योगेश्वर रुप धारण करके भागवत् सुनने आया करते थे। दामोदर कुन्ड में स्नान करते समय आपश्री को भगवत् स्वरुप प्राप्त हुआ जो दामोदर जी के नाम से जुनागढ़में विराजित है।

बैठक 65, प्रभाषक्षेत्र की बैठक, त्रिवेणी नदी का घाट, प्रभास पाटण, जिला जूनागढ़, (प्रभास क्षेत्र वेरावल से 3 किलोमीटर है।)

सोमनाथ प्रभाष क्षेत्र में देहोत्सर्ग स्थल में छोकर वृक्ष के नीचे गुफा में श्री महाप्रभुजी ने भागवत् सप्ताह पारायण किया। सोमनाथ जी स्वयं भागवत् की कथा सुनने आते थे और चुपचाप एक कौने में बैठकर कथा सुनते थे। किसी को उनकी उपस्थिति का आभास भी नहीं होता था। आपकी आज्ञा से आपका एक ब्राह्मण सेवक श्री आचार्यश्री की शरण में आया। प्रभासक्षेत्र की पंचतीर्थी प्ररिक्रमा की।

बैठक 66, माधवपुर की बैठक, कदम्ब कुण्ड के ऊपर, जिला जूनागढ़ (माधवपूर वेरावल - पोंदबंदर मोटर मार्ग पर है।)

माधवपूर में वनक्षेत्र में कदम कुण्ड पर श्री महाप्रभुजी ने भागवत् सप्ताह किया था। यहीं पर आपश्री ने माधवरायजी का नया मंदिर बनवाकर सेवा का क्रम निर्धारित किया। इसके पूर्व पुजारी ठाकुरजी को एक लोटा जल से मात्र स्नान करा दिया करता था। आपने धोती उपरणा धराकर पाग का श्रृंगार किया। माधवपुर में श्री रूकमणीजी का श्री ठाकुरजी से विवाह हुआ है।

बैठक 67, गुप्त प्रयाग की बैठक, पो. देलवाड़ा, जिला जूनागढ़ (देलवाड़ा से 25 किमी.)

प्रयाग कुण्ड के उपर छोकर वृक्ष के नीचे श्री आचार्यजी की बैठक है। यहाँ पर एक ब्राह्मण आपकी शरण में आया। जिसे आपने नाम निवेदन दीक्षा दी। उसे आपने कहा कि आठ दिनों में तुम्हारी मृत्यु हो जावेगी। पर अगले जन्म में तुम गिरीराज की तलहटी में जन्म लोगे और वहाँ श्रीनाथजी की गायों की सेवा करने का सौभाग्य मिलेगा। इस प्रकार प.भं. श्री गोपीनाथदास को ग्वाल के रूप में अगले जन्म में अवतरित होने की आज्ञा आपश्री ने की।

बैठक 68, तगड़ी की बैठक, अहमदाबाद-बोटाद मार्ग पर (अहमदाबाद से 138 किमी. पर)

यहां श्री महाप्रभुजी ने भागवत् सप्ताह किया। यहां एक ग्रहस्थ ब्राह्मण के घर चौतरा पर विराजे। आपने कृपाबल से ग्रह स्वामी को अपने दोनों पुत्रों में कृष्ण बलराम की अलौकिक लीला के दर्शन करवाये।

बैठक 69, नरोड़ा, नरोड़ा रोड़, अहमदाबाद

अहमदाबाद से पूर्व की ओर तीन किलोमीटर पर नरोड़ा में गोपालदास क्षत्रिय के घर श्री महाप्रभुजी ने भागवत् सप्ताह किया था। आपने उन्हें श्यामलालजी का स्वरुप सेवा के लिए पधराया था। यह स्वरुप आजकल अहमदाबाद में दोशीवाड़ा की पोल में श्री नटवरलाल श्यामलाल के मंदिर में विराजित है। प्रभु भक्त की परिक्षा करने के लिये दु:ख भेजते हैं। इसलिये उन्हें धैर्यपूर्वक सहन करना चाहिये। वह दु:ख भगवदिच्छा से ही दूर हो सकता है। व्यर्थ मेहनत करके ईश्वर पर अविश्वास प्रकट करना नहीं चाहिये।

बैठक 70, गौधरा की बैठक, राणा व्यास मार्ग, पटेल बाजार, गोधरा जिला पंच महल, गुजरात

यह बैठक श्री राणा व्यास के घर में है। राणा महापंडित थे। लेकिन काशी में पंडितों से शस्त्रार्थ में अहंकारवश हार गये, तब गंगाजी में आत्महत्या करने जा रहे थे। उस समय श्री वल्लभाचार्यजी वैष्णवों को बता रहे थे कि आत्महत्या करनेवाला सात जन्म तक नरक

भोगता है। राणा व्यास तुरन्त श्री वल्लभ की शरण में आ गए, आपश्री ने नाम निवेदन कराया और बालकृष्णलाल का स्वरुप पधराया। आपश्री ने उन्हें चतु:श्लोकी ग्रन्थ पढ़ाया और विद्वतसभा में पुन: विजयश्री दिलवाई। आपश्री ने यहां भागवत्-सप्ताह पारायण किया और राणा व्यास को तीन दिनों तक वेणु गीत की व्याख्या समझाई।

बैठक 71, खेरालु, जगन्नाथ जोशी का घर, जिला महसाणा (मेहसाणा से 44 किमी.)

जगन्नाथ जोशी के घर श्री महाप्रभुजी बिराजे थे। जगन्नाथ जोशी की माताजी भगवदीय महिला थी। जगन्नाथ जोशी के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री महाप्रभुजी ने युगल गीत के एक श्लोक का भाव तीन प्रहर तक वचनामृत कर रस वर्षण किया है।

बैठक 72, सिद्धपुर की बैठक, बिन्दु सरोवर रोड़, सिद्धपुर, जिला महसाणा

(पश्चिम रेल्वे की अहमदाबाद-दिल्ली छोटी लाईन पर महसाणा से 36 किमी. तथा आबू रोड़ से 82 किमी. पर सिद्धपुर स्टेशन है।) सिद्धपुर में बिन्दु सरोवर पर कर्दम ऋषि के आश्रम के पास श्री महाप्रभुजी की बैठक है। इसी स्थल पर श्री कपिल देवजी ने माता देवहुतीजी को ''सांख्य योग'' का उपदेश किया है। यहाँ पर श्री महाप्रभुजी का मायावादियों से शास्त्रार्थ हुआ था।

बैठक 73, उज्जैन की बैठक, गोमतीकुण्ड, मंगलनाथ मार्ग, उज्जैन (म.प्र.)

अवन्तिका के अंकपात क्षेत्र में गोमती कुण्ड पर पीपल के वृक्ष के नीचे श्री महाप्रभुजी ने भागवत पारायण किया। यहीं श्री महाप्रभु जी ने एक पीपल के पत्ते को रोपकर संध्या वंदन का जल सींचा। रातभर में वृक्ष तैयार हुआ जिसे देख कई विद्धान अचंभित हुए। आप ने शास्त्रर्थ कर उन्हें परास्त किया और कईयों को शरण में लिया। उज्जैन में ही श्रीमहाप्रभुजी के परम कृपापात्र श्री पद्मा रावल रहते थे। जिनके वंशाजों का सिंहपुरी में श्री गोवर्द्धननाथ जी (इन्द्रदमन) का मंदिर है। यहीं पर श्री महाप्रभुजी का उपरणा आज भी विराजमान है, जिसके नित्य राजभोग में दर्शन कराये जाते हैं।

बैठक 74, पुष्कर की बैठक, ब्रह्माजी के मंदिर के आगे, वल्लभ घाट, पुष्कर जिला अजमेर (राज. अजमेर से 12 किमी.)

सरोवर के तट पर वल्लभ घाट पर छोकर वृक्ष के नीचे श्री महाप्रभुजी ने भागवत् सप्ताह किया था। ब्रह्माजी की उत्पत्ति नाभि कमल से हुई थे। यहाँ ब्रह्माजी का मंदिर है। पुष्करजी सब तीर्थो के पिता रूप है। ''माता गंगा समं तीर्थ-पिता पुष्करमेव च।'' वैष्णवों का अपराध ईश्वर के अपराध से भी महान है।

बैठक 75, कुरुक्षेत्र की बैठक, सरस्वती कुण्ड, शक्ति देवी के मंदिर के पास, कुरुक्षेत्र

(उत्ता रेल्वे की दिल्ली अंबाला रेल्वे लाईन पर स्कुरुक्षेत्र स्टेशन है।) कुरुक्षेत्र में कुण्ड के ऊपर श्री महाप्रभुजी ने भागवत पारायण किया। आपश्री ने मेघन को आज्ञा की कि यह धर्म क्षेत्र है जहाँ महाभारत युद्ध हुआ था। भगवान् कृष्ण न यहीं गीता उपदेश दिया और विराट स्वरुप के दर्शन कराये। यहां युगल गीत पर विस्तृत टीका की जिसे सुनकर कृष्णदासजी मेघन देहानुसंधान भूल गये।

बैठक 76, हरिद्वार की बैठक, हर की पेढ़ी के, मार्ग पर, रामघाट, हरिद्वार

यहां आपश्री ने सं. 1576 में कुंभ पर्व पर पधार कर भागवत् सप्ताह किया, जिसका रस बहुत से संतों और गृहस्थों को मिला। इस समय आपके साथ श्री दामोदरदास हरसानी, श्रीकृष्णादास मेघन, वासुदेवदास छकड़ा, माधव भट्ट कश्मीरी, गोविन्द दुबे आदि अनेक वैष्णव थे।

बैठक 77, बदरिकाश्रम मंदिर के पास, बद्रीनाथ (उ.प्र.)

श्री महाप्रभुजी ने यहां भागवत् सप्ताह किया। वामन द्वारशी के दिन फलाहार न मिलने पर भगवान बद्रीनाथजी ने कहा-उत्सवान्ते च पारणम्। भगवत् आज्ञा मानकर रसोई तैयार कर भोग समर्पित कर महाप्रसाद लिए। इसके बाद से आप वामन द्वादशी का उपवास नहीं करते थे। यहाँ पर आपने भगवान बद्रीनारायण की भगवत पाठ सुनाया था।

बैठक 78, केदारनाथ जी की बैठक (उ.प्र.) (अप्रकट)

केदार कुंड पर श्रीमहाप्रभुजी ने भागवत् सप्ताह किया था। श्री केदारनाथजी योगेश्वर रुप में कथा सुनने के लिए पधारते थे।

बैठक 79, व्यास आश्रम, अलकनन्दा, भागीरथी संगम के पास, कैशव प्रयाग, बद्रीनाथ (उ.प्र.) (अप्रकट)

व्यास आश्रम में पधारकर महाप्रभुजी ने व्यास गुफा में प्रवेश किया। व्यासजी की इच्छानुसार आपश्री ने युगल गीत के श्लोक की व्याख्या तीन दिनों तक की। श्री मेघन गुफा के बाहर तीन दिन तक खड़े रहे। श्री महाप्रभुजी ने प्रसन्न होकर तीन वर मांगने को कहा। व्यास गुफा में आपश्री ने एक सप्ताह भागवत पारयण किया।

बैठक 80, हिमालय पर्वत की बैठक (अप्रकट)

हिमालय में श्री महाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत् पारायण किया। यह बैठक गुप्त है। ऐसी मान्यता है कि नगाधिराज हिमालय ब्राह्मण का वेश धरकर श्रीमद् भागवत् का श्रवण करने आया करते थे।

बैठक 81, व्यास गंगा की बैठक

व्यास गंगा नामक तीर्थ में श्री महाप्रभुजी ने शमी वृक्ष के नीचे भागवत् सप्ताह पारायण किया। गंगाजी स्वयं स्त्री रुप धारण कर भागवत् सुनने पधारती थी। महाप्रभुजी ने इस स्थान का महत्व प्रकट करते हुए श्री दामोदरदास हरसानी से कहा था कि यह स्थल व्यासजी का जन्म स्थल है और यहीं पर श्रीमद् भगवत् की रचना हुई थी। अतिथि की कोई तिथि नहीं होती। भगवान् को अतिथि मत बनाओ, काम पड़ा तो आव्हान कर बुला लिया। काम निकल गया तो बिदा कर दिया।

बैठक 82, मंदराचल की बैठक (अप्रकट)

मंदराचल पर शमी वृक्ष के नीचे श्री महाप्रभुजी की बैठक है। यहां श्री महाप्रभुजी ने भागवत् सप्ताह किया। श्री मधुसूदन ठाकुरजी के मंदिर में पधारकर आपश्री ने उनका सेवा श्रृंगार किया। यह मान्यता है कि ठाकुरजी मधुसुदन जी स्वयं रसमय कथा सुनने के लिए पधारते थे। यहाँ ये प्रस्थान करने के बाद महाप्रभुजी ब्रज में पधारे।

बैठक 83, अडेल की बैठक, त्रिवेणी संगम के, सामने, ग्राम देवरस, पो. नैनी जि. इलाहाबाद (उ.प्र.)

यह स्थान इलाहबाद में प्रयाग संगम के सम्मुख है। बैठक के स्थान को देव रखिया कहते हैं। यहाँ कई पंडित शास्त्रार्थ करने के लिए पहुँच जाते थे, इससे भगवत् सेवा में कई बार व्यवधान उपस्थित होता था। एक बार तो एक पंडित से शास्त्रार्थ करते समय काफी विलम्ब हो गया। ठाकुरजी के उत्थान का समय हो गया। ठाकुरजी ने माताजी को बुलाकर आत्म निवेदन करवाया और सेवा स्वीकार की। भेंट में मोती की माला स्वीकार की जो आज भी नवनीत प्रियाजी (नाथद्वारा) को धराई हो जाती है।

बैठक 84, चरणाट की बैठक, आचार्य कूप, पो. चुनार, जिला मिर्जापूर (उ.प्र.)

इस स्थान को चुनार भी कहते है। एक ब्राह्मण को श्री विट्ठलनाथजी का स्वरुप प्राप्त हुआ जिन्हे श्री महाप्रभुजी को आकर पधराया। उसी समय श्री महाप्रभुजी को पुत्र जन्म की सूचना मिली। अत: अपने पुत्र का नाम विट्ठलनाथ ही रखा। उस समय महा अलौकिक नंदकूप में से श्री नंदरायजी, श्री यशोदाजी एवं ब्रजभक्त प्रकट थे और नंद महोत्सव हुआ था।

Calendar of 500 Years

YEARS (1901-2400)

1901	1918	1935	1957	1974	1991	2013	2030	2047	2069	2086	2103	2125	2142	2159	2181	2198	2215	2237
1902	1919	1941	1958	1975	1997	2014	2031	2053	2070	2087	2109	2126	2143	2165	2182	2199	2221	2238
1903	1925	1942	1959	1981	1998	2015	2037	2054	2071	2093	2110	2127	2149	2166	2183	2205	2222	2239
1905	1922	1939	1961	1978	1995	2017	2034	2051	2073	2090	2107	2129	2146	2163	2185	2202	2219	2241
1906	1923	1945	1962	1979	2001	2018	2035	2057	2074	2091	2113	2130	2147	2169	2186	2203	2225	2242
1909	1926	1943	1965	1982	1999	2021	2038	2055	2077	2094	2111	2133	2150	2167	2189	2206	2223	2245
1910	1927	1949	1960	1983	2005	2022	2039	2061	2078	2095	2117	2134	2151	2173	2190	2207	2229	2246
1907	1929	1946	1963	1985	2002	2019	2041	2058	2075	2097	2114	2131	2153	2170	2187	2209	2226	2243
1913	1930	1947	1969	1956	2003	2025	2042	2059	2081	2098	2115	2137	2154	2171	2193	2210	2227	2249
1914	1931	1953	1970	1987	2009	2026	2043	2064	2082	2099	2121	2138	2155	2177	2194	2211	2233	2250
1911	1933	1950	1967	1989	2006	2023	2045	2062	2079	2101	2118	2135	2157	2174	2191	2213	2230	2247
1917	1934	1951	1973	1990	2007	2029	2046	2063	2085	2102	2119	2141	2158	2175	2197	2214	2231	2253
1915	1937	1954	1971	1993	2010	2027	2049	2065	2083	2105	2122	2139	2161	2178	2195	2217	2234	2251
1921	1938	1955	1977	1994	2011	2033	2050	2068	2089	2106	2123	2145	2162	2179	2201	2218	2235	2257
–	–	–	–	1904	1932	1966	1988	2016	2044	2072	2100	2128	2156	2184	2212	2240	2268	2296
–	–	–	–	1908	1936	1964	1992	2020	2048	2076	2104	2132	2160	2188	2216	2244	2272	2300
–	–	–	–	1912	1940	1968	1996	2024	2052	2080	2108	2136	2164	2192	2220	2248	2276	2304
–	–	–	–	1916	1944	1972	2000	2028	2056	2084	2112	2140	2168	2196	2224	2252	2280	2308
–	–	–	–	1920	1948	1976	2004	2032	2060	2088	2116	2144	2172	2200	2228	2256	2284	2312
–	–	–	–	1924	1952	1980	2008	2036	2066	2092	2120	2148	2176	2204	2232	2260	2288	2316
–	–	–	–	1928	1956	1984	2012	2040	2067	2096	2124	2152	2180	2208	2236	2264	2292	2320

A					
SUN		7	14	21	28
MON	1	8	15	22	29
TUE	2	9	16	23	30
WED	3	10	17	24	31
THU	4	11	18	25	
FRI	5	12	19	26	
SAT	6	13	20	27	

B					
SUN		6	13	20	27
MON		7	14	21	28
TUE	1	8	15	22	29
WED	2	9	16	23	30
THU	3	10	17	24	31
FRI	4	11	18	25	
SAT	5	12	19	26	

C					
SUN		5	12	19	26
MON		6	13	20	27
TUE		7	14	21	28
WED	1	8	15	22	29
THU	2	9	16	23	30
FRI	3	10	17	24	31
SAT	4	11	18	25	

D					
SUN		4	11	18	25
MON		5	12	19	26
TUE		6	13	20	27
WED		7	14	21	28
THU	1	8	15	22	29
FRI	2	9	16	23	30
SAT	3	10	17	24	31

Calendar of 500 Years

2254	2271	2293	2310	2327	2349	2366	2383
2255	2277	2294	2311	2333	2350	2367	2389
2261	2278	2295	2317	2334	2351	2373	2390
2258	2275	2297	2314	2331	2353	2370	2387
2259	2281	2298	2315	2337	2354	2371	2393
2262	2279	2301	2318	2335	2357	2374	2391
2263	2285	2202	2319	2341	2358	2375	2397
2265	2282	2307	2321	2338	2355	2377	2394
2266	2283	2305	2322	2339	2361	2378	2395
2267	2289	2306	2323	2345	2362	2379	–
2269	2286	2303	2325	2342	2359	2381	2398
2270	2287	2308	2326	2343	2365	2382	2399
2273	2290	2309	2329	2346	2363	2385	–
2274	2291	2313	2330	2347	2369	2386	–
2324	2352	2380	–	–	–	–	–
2328	2356	2384	–	–	–	–	–
2332	2360	2388	–	–	–	–	–
2336	2364	2392	–	–	–	–	–
2340	2368	2396	–	–	–	–	–
2344	2372	2400	–	–	–	–	–
2348	2376	–	–	–	–	–	–

MONTHS

JAN	FEB	MAR	APR	MAY	JUN	JUL	AUG	SEP	OCT	NOV	DEC
B	E	E	A	C	F	A	D	G	B	E	G
C	F	F	B	D	G	B	E	A	C	F	A
D	G	G	C	E	A	C	F	B	D	G	B
G	C	C	F	A	D	F	B	E	G	C	E
A	D	D	G	B	E	G	C	F	A	D	F
E	A	A	D	F	B	D	G	C	E	A	C
F	B	B	E	G	C	E	A	D	F	B	D
B	E	E	A	C	F	A	D	G	B	E	G
C	F	F	B	D	G	B	E	A	C	F	A
D	G	G	C	E	A	C	F	B	D	G	B
G	C	C	F	A	D	F	B	E	G	C	E
A	D	D	G	B	E	G	C	F	A	D	F
E	A	A	D	F	B	D	G	C	E	A	C
F	B	B	E	G	C	E	A	D	F	B	D
E	A	B	E	G	C	E	A	D	F	B	D
C	F	G	C	E	A	C	F	B	D	G	B
A	D	E	A	C	F	A	D	G	B	E	G
F	B	C	F	A	D	F	B	E	G	C	E
D	G	A	D	F	B	D	G	C	E	A	C
B	E	F	B	D	G	B	E	A	C	F	A
G	C	D	G	B	E	G	C	F	A	D	F

E

SUN	31	3	10	17	24
MON		4	11	18	25
TUE		5	12	19	26
WED		6	13	20	27
THU		7	14	21	28
FRI	1	8	15	22	29
SAT	2	9	16	23	30

F

SUN	30	2	9	16	23
MON	31	3	10	17	24
TUE		4	11	18	25
WED		5	12	19	26
THU		6	13	20	27
FRI		7	14	21	28
SAT	1	8	15	22	29

G

SUN	1	8	15	22	29
MON	2	9	16	23	30
TUE	3	10	17	24	31
WED	4	11	18	25	
THU	5	12	19	26	
FRI	6	13	20	27	
SAT	7	14	21	28	

STEPS FOR SEARCHING YOUR CALENDAR

FIRST FIND OUT THE YEAR AND IN THE SAME LINE FIND OUT THE ALPHABET OF THE MONTH. THEN LOOK AT THE CALENDAR TABLET BELOW THE ALPHABET.

MAHESHWARI BHAWAN ADDRESS LIST

Maheshwari Bhawan,
Chalukya Nagar, Bijapur 586101 (Karnataka State)
Phone (08352) 260101.

JALGAON (MAHARASTRA)
Shri Mahesh Pragati Mandal
Ring Road , Jalgaon - 425001
Phone NO. (O257) 2237821

AHMEDABAD (GUJRAT)
SRI MAHESHWARI SEVA SAMITI
OLD CAMP ROAD,
BEHIND RAJASTHAN SCHOOL
SHAHIBAGH, AHMEDABAD
TEL-079-25623402

SRI MAHESHWARI PRAGATI MANDAL
GIRDHAR NAGAR, SHAHI BAGH ROAD
OPP. CHANDRANI HOSPITAL, AHMEDABAD
TEL : 079-22867763, 22850673

AKOLA (MAHARASTRA)
MAHESHWARI BHAWAN
NEW RADHAKISHAN PLOT
AKOLA-444001, MAHESH BHAWAN
NEAR RTO OFFICE, AKOLA

BANGALORE (KARNATAKA)
MAHESHWARI SAMAJ BHAWAN
SREENATH SOCIETY, OKALIPURAM MAIN ROAD
SRI RAMPURAM, BANGALORE
TEL : 080-23127597

BADRINATH (UTTARAKHAND)
AKHIL BHARTIYA MAHESHWARI SEVA SADAN
NEAR BUS STAND, BADRINATH
TEL : 01381-222237

BHILWARA (RAJASTHAN)
MAHESHWARI BHAWAN
SHASTRI NAGAR, SOLANKI TALKIES ROAD,
BHILWARA

BELGAUM (KARNATKA)
MAHESHWARI BHAWAN
VITTHALDEV GALI, SHAHPUR
BELGAUM-590003, TEL: 0831-2487780

BIKANER (RAJASTHAN)
MAHESHWARI BHAWAN
INSIDE IDGAH BARI,

MAHESH SADAN
DAGA MOHALLA, BIKANER
MAHESHWARI SADAN
OUTSIDE JASUSAR GATE, BIKANER

CHENNAI (TAMILNADU)
SRI MAHESHWARI BHAWAN
MINT STREET, SOWCARPET, CHENNAI
TEL : 033-25351295

DEOGHAR (JHARKHAND)
MAHESHWARI BHAWAN, BOMPASS TOWN,
DEOGARH, TEL : 06432-236696

FARIDABAD (HARYANA)
MAHESHWARI BHAWAN
PLOT NO. 160, SECTOR-7A, FARIDABAD
TEL : 0129-2244092

GUMLA (JHARKHAND)
MAHESHWARI BHAWAN
LOHARDAGA ROAD, GUMLA

GUWAHATI (ASSAM)
ASSAM MAHESHWARI BHAWAN
K.C. CHOUDHARU ROAD
CHATRI BARI, GUWAHATI (ASSAM)
TEL: 2517205, 98643-02694

HYDERABAD (ANDHRA PRADESH)
MAHESHWARI BHAWAN
OLD KABUTARKHANA, HYDERABAD

MAHESHWARI BHAWAN
BEGUM BAZAR, HYDERABAD

HIMMATNAGAR (GUJRAT)
MAHESHWARI SEVA SAMITY
HARI OM SOCIETY, MAHAVIRNAGAR
HIMMATNAGAR, DISTT.-SABAKANTHA
TEL : 02772-240504

HARIDWAR (UTTARAKHAND)
AKHIL BHARTIYA MAHESHWARI SEVA SAMITY
OPP. DOODHADHARI MANDIR
RISHIKESH ROAD, HARIDWAR-249401
TEL : 01334-261141, 261636, 321833

INDORE (MADHYA PRADESH)
MAHESHWARI BHAWAN
GORAKUND CHOURAHA
108 SHEETLA MATA BAZAR
RAJWADA, INDORE-452002
TEL : 0731-2459583, 2459626

MAHESHWARI BHAWAN
OPP. ZOO, SAYOGITA GANJ
INDORE-452001 (M.P.)
TEL : 0731-2700970

MAHESH NAGAR DHARAMSHALA
MAHESH NAGAR- INDORE
TEL : 0731-2416922

JAIPUR (RAJASTHAN)
MAHESHWARI UTSAV BHAWAN
VIDYADHAR NAGAR, SECTOR-2,
CHANDPOLE BAZAR, JAIPUR

JODHPUR (RAJASTHAN)
MAHESHWARI BHAWAN
JALORI GATE, JODHPUR (RAJ.)
TEL : 0291-2626075

MAHESHWARI BHAWAN ADDRESS LIST

JORHAT (ASSAM)
MAHESHWARI SEVA NYAS
SRI MARWARI THAKURBARI
A.T. ROAD, JORHAT, TEL : 0376-2328956

JAMSHEDPUR (JHARKHAND)
SRI MAHESHWARI MANDAL BHAWAN
M.E. SCHOOL ROAD,
JUGSALAI, JAMSHEDPUR, TEL : 0657-2291464

KATHMANDU (NEPAL)
MAHESHWARI SADAN
KAMALPOKHRI, KATHMANDU, TEL : 00977-1-4412897

KODARMA (JHARKHAND)
MAHESHWARI BHAWAN
A.D. BUNGALOW ROAD
JHUMRITALAIYA, DIST. KODARMA
TEL : 06595-2423452

KOLKATA (WEST BENGAL)
MAHESHWARI BAHWAN
4, SOBHARAM BYSACK STREET, KOLKATA -7

KOTA (RAJASTHAN)
SRI MAHESHWARI BHAWAN
17, JHALAWAR ROAD, KOTA-324005
TEL : 0744-22005026, FAX-22018834

NATHDWARA (RAJASTHAN)
SRI AKHIL BHARTIYA MAHESHWARI SEVA SAMITY
MIRA HOTEL COMPOUND
NEAR NATHUVAS PETROL PUMP,
NATHDWARA (RAJ)
TEL : 02953-231379, 232301, 395830

NANDED (MAHARASTRA)
MAHESHWARI BHAWAN
CIDCO ROAD, NEW KAUTHA,
NANDED-431604, TEL : 02462-229142

NEEMUCH (M.P.)
MAHESHWARI SAMAJ BHAWAN
VEER PARK ROAD, B.NO. 35, NEEMUCH
TEL : 07423-220500

NOKHA (RAJASTHAN)
MAHESHWARI BAHWAN
BIKANER ROAD, NOKHA

PUSHKAR (RAJASTHAN)
SRI AKHIL BHARTIYA MAHESHWARI SEVA SAMITI
PURANE RANG JI KE MANDIR KE PAAS
PUSHKAR, DIST.-AJMER
TEL : 0145-2773321, 2772038, 3293838

KOTA (RAJASTHAN)
SRI MAHESHWARI BHAWAN
17, JHALAWAR ROAD, KOTA-324005
TEL : 0744-22005026, FAX-22018834
NATHDWARA (RAJASTHAN)

SRI AKHIL BHARTIYA MAHESHWARI SEVA SAMITY
MIRA HOTEL COMPOUND
NEAR NATHUVAS PETROL PUMP,
NATHDWARA (RAJ)
TEL : 02953-231379, 232301, 395830

NANDED (MAHARASTRA)
MAHESHWARI BHAWAN
CIDCO ROAD, NEW KAUTHA, NANDED-431604
TEL : 02462-229142

NEEMUCH (M.P.)
MAHESHWARI SAMAJ BHAWAN
VEER PARK ROAD, B.NO. 35, NEEMUCH
TEL : 07423-220500

NOKHA (RAJASTHAN)
MAHESHWARI BAHWAN
BIKANER ROAD, NOKHA
PUSHKAR (RAJASTHAN)

SRI AKHIL BHARTIYA MAHESHWARI SEVA SAMITI
PURANE RANG JI KE MANDIR KE PAAS
PUSHKAR, DIST.- AJMER
TEL : 0145-2773321, 2772038, 3293838

RATLAM (M.P.)
MAHESHWARI BHAWAN
KASARA BAZAR, RATLAM
TEL : 0741-2239841

RANCHI (JHARKHAND)
SRI MAHESHWARI BHAWAN
SEVA SADAN PATH, UPPER BAZAR
RANCHI-834001
TEL : 0651-2200126, 2209439

SURAT (GUJRAT)
MAHESHWARI BHAWAN
CITY LIGHT, PARLE POINT, SURAT
TEL : 0261-2211279

SADULPUR (RAJASTHAN)
SRI MAHESHWARI PANCHAYAT BHAWAN
RAMBAS, SADULPUR-331023
TEL : 94140-86988

SARDARSHAHR (RAJASTHAN)
MAHESHWARI BHAWAN
NEAR POWER STATION
SARDARSHAHR, TEL : 01564-220696

SIKAR (RAJASTHAN)
MAHESHWARI BHAWAN
PATHEPURI GARE, SIKAR-332001,
TEL : 01572-257196

SRI DUNGARGARH (RAJASTHAN)
MAHESHWARI BHAWAN
KALU BASS, SRI DUNGARGARH,
TEL : 01565-222867

MAHESHWARI BHAWAN ADDRESS LIST

MAHESH BHAWAN
BIGGA BASS, SRI DUNGARGARH,
TEL : 01565-222937

MAHESHWARI SEVA SADAN
ADSAR BASS, SRI DUNGARGARH,
TEL : 01565-222285

UJJAIN (M.P.)
MAHESHWARI BHAWAN
GOLAMANDI, UJJAIN, TEL : 0734-2559389, 2551307

VARANASI (UTTAR PRADESH)
MAHWSHWARI DHARAMSHALA
KARNAGHANTA, VARANASI, TEL : 0542-2414134

VARANASI
MAHESHWARI BHAWAN
TULSIPUR, MAHMOORGANJ
NEAR PADIN KANYA VIDYALAYA, VARANASI
TEL : 0542-2363560

VAPI (GUJRAT)
MAHESHWARI BHAWAN
NEAR JAYSHREE TALIES
MUKTANAND MARG
VILL : CHAL, VAPI , DIST.-VALSAD
TEL : 94262-56678

VADODRA/BARODA (GUJRAT)
-MAHESHWARI SEVA SAMITI
OPP. GANGOTRI APARTMENT
NEAT KHANDER ROAD, VADODARA
TEL : 94263-75205

VRINDAVAN (UTTAR PRADESH)
SRI AKHIL BHARTIYA MAHESHWARI SEVA SADAN
MAHESH MARG, RAMENRETI ROAD
VRINDAWAN-281124
TEL : 0565-2540421, 2540287

VIJAYAWADA (ANDHRA PRADESH)
MAHESHWARI SAMAJ BHAWAN
11-30-31 SESHAIAH STREET
VIJAYWADA-520001, TEL : 0866-2563691

PANDERPUR
MAHESHWARI DHARAMSHALA
DUTTA GHAT
PRADAKSHINA MARG
PANDERPUR, TEL : 02186-223377

TRIMBKESHWAR
MAHESHWARI BHAKT MANDIR
JUNA JAKAT NAKA KE PAAS
NEAR BUS STAND
TEL : 02594-233209

LUCKNOW (UTTAR PRADESH)
MAHESHWARI SATSANG BHAWAN
6/29 VIPUL KHAND
GOMTI NAGAR, LUCKNOW

NAGPUR (MAHARASTRA)
MAHESHWARI BHAWAN
SITABULDI, TEKDI ROAD, NAGPUR
SHRI BADI MARWAD MAHESHWARI BHAWAN
JUNI RESHAM OLI
ITWAHI, NAGPUR

SRI BADI MARWAD MAHESHARI PANCHAYAT BHAWAN
680-B, HIVRI NAGAR,
OPP. VARDHMAN NAGAR, INOX, NAGPUR-4400018
TEL : 0712-2776300

SHRI MAHESHWARI BHAWAN
ME SCHOOL ROAD
JUGSALAI
JAMSHEDPUR-831006
TEL : 0657-2291464

PUNA MAHESHWARI CHATRAVAAS
AKHIL BHARTIYA MAHESHWARI
EDUCATIONAL & CHARITABLE TRUST
AFTER MAHESH SANSKRITIK BHAWAN
I.T. HOSTEL ROAD
BEFORE SHATRUNJAY TEMPLE
SURVEY NO. 59
KOTHWA B. PUNA-48
TEL : 26962359, 26961314

KHAMGAON (MAHARASTRA)
MAHESHWARI BHAWAN
KHAMGAON
NAGAUR (RAJASTHAN)
MAHESHWARI SEVA TRUST
LADNU ROAD, JASWANTGARH-341304
DIST-NAGAUR (RAJASTHAN)
TEL : 09414400432, 09414086442

MERTA (RAJASTHAN)
SHRI MAHESHWARI PANCHAYAT
POST-MERTA CITI-341510
DIST. NAGAUR (RAJASTHAN)
TEL : 01590-220889, 230672

SAHARANPUR (UTTAR PRADESH)
SHRI MAHESHWARI PANCHAYATI MANDIR
KHALAPAR, SAHARANPUR
BIJAPUR (KARNATAKA

With Best Compliments From :

Siddhartha Kothari

M. : 9331188444

VESTIGE
ELEVATORS PVT LTD

121/1/A, B T ROAD,
DUNLOP, KOLKATA-108

Sri Shreelal - Gita Devi Kothari

Sri Subhodh - Neelam Kothari

Sri Sushil - Shashi Kothari

Miss Shrutika Kothari

Miss Medha Kothari

Reet : Raman Lal Shreelal

M. : 9830722044

Sri Giriraj - Kiran Kothari

Sri Shiv Kr. - Rajkumari Kothari

Sri Madan - Nisha Kothari

Master Nandkishor Kothari

Master Piyush Kothari

Master Yash Kothari

Miss Kirti Kothari

Miss Shruti Kothari

Reet : Laxminarayan Jiwan Das

M. : 9830145836

SWITCHGEAR

SAFE & SURE

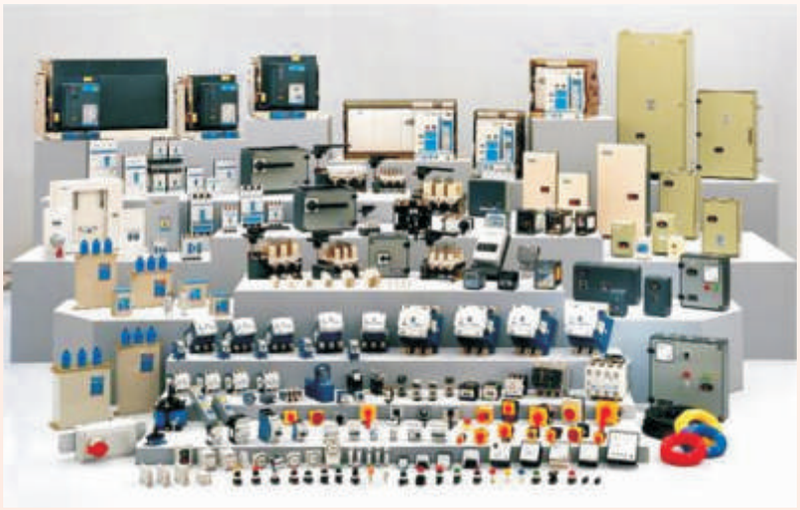

SIEMENS

HAVELLS

salzer

minilec

SHREE G. R. B. INTERNATIONAL

Authorised Stockist of : L & T Switchgear, Sazler, GIC &
Dealer in all kinds of Electrical Items

32, Ezra Street, 4th Floor, Room No. 460
Kolkata - 700 001
Phone : 3985 0216, Cell : 98310 12199, Smart : 1039
Website : www.sgrbint@yahoo.com

G. D. KOTHARI INDUSTRIES

Office
Room No. 398, 4th Floor
MANOHAR DAS KATRA
113/B, Manohar Das Katra
Kolkata - 700 007

Importers & Mfrs
DESIGNER CANE FURNITURES
Ganesh Kothari : 9830043828
9433024889

Residence
Block-2, Flat No. 10C
SILVER SPRING
5, J B S Halden Avenue
Kolkata - 700105

With Best Compliments from : -

KOTHARI ATITHI BHAWAN

Gantholi Road, Jatipura,
Dist. : Goverdhan,
PIN – 281 503 (U.P.)

098378 77280
087916 27418

Newly constructed guest house fully furnished with latest amenities for homely and comfortable stay at Jatipura

With Best Compliments from : -

Lalit Kothari
Shashi Kothari
Shivam Kothari

"Satyam Tower", Flat No. 9B/3,
9th Floor, 3 Alipore Road,
KOLKATA – 700 027
: 2449 – 9177

OFFICE : -

Perfecto Electricals

32A, C.R. Avenue, Trust House,
4th floor, KOLKATA – 700 012
Phone : 2212 – 2331 / 2391 / 0862

With Best Compliments from : -

करुणा सिन्धु गेस्ट हाऊस नाथ द्वारा

जिला - उदयपुर, राजस्थान

निर्माता - स्व. गिरधर दास जी कोठारी

संचालन - करुणा सिन्धु प्रोपर्टिज प्रा. लि.

मो. : 9339535135

Kothari Group
Imagine Inspire Deliver

FROM THE ERA OF PRINCESS'

:
to the
:

ERA OF INTERNET

We have kept pace with the changing needs of time,
(1819-2017 still going strong)

Textile Division
The North India Spinning Mills
Akbarpur, Punjab
GIS Cotton Mill, Champdani

Engineering Division
Modern India Construction Co.
Sodepur, West Bengal

Betjan Tea Estate (Assam)
Gairkhata Tea Estate (West Bengal)
Taipoo Tea Estate (West Bengal)
Jutlibari Tea Estate (Assam)
Tengpani Tea Estate (Assam)

Gouranga Tea Estate (Assam)
Dooria Tea Estate (Assam)
Barkatonee Tea Estate (Assam)
Arun Tea Estate (Assam)
Dherai Tea Estate (Assam)

Waldies Division
Manufacturers of renowned Griffin brand
Lead oxides & Stabilisers for PVC industry

Trading & Agency Products
Paints, Waterproofing Compounds,
Insulating Varnishes, Vinertex, Novaflek

REAL ESTATE DIVISION
Owner of renowned GILLANDER HOUSE in Kolkata

Marine Claim Setting Agency & Surveyors
(Member of International Underwriting Association of London)

GILLANDERS ARBUTHNOT & CO. LTD.

C-4, Gillander House, Netaji Subhas Road, Kolkata - 700 001, India
Phone : 2230-2331 (6 Lines), 2242 8070/8072, 2242 9140 (3 Lines)
3022-4470 (4 Lines), Fax : 2230 4185
E-mail : gilander@cal3.vsnl.net.in

Branches / Offices : Amritsar, Bangalore, Kundli, Ludhiana, Panipat, Salem, Solapur